SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा पत्रिका

ज्ञान गंगा

द्वितीय वार्षिक संस्करण 2023-24

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
20, सरोजिनी नायडू मार्ग,
प्रयागराज - 211001

सरकारी कामकाज हिंदी में करना
कोई मुश्किल काम नहीं है।
आप शुरू तो कीजिए, धीरे-धीरे
आपको लगने लगेगा, यह तो बहुत
ही आसान है।

'ज्ञान गंगा' परिवार

मुख्य संरक्षक	श्री राम हित, महानिदेशक क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज
संपादक मंडल	श्री नितिन सिंह, संकाय सदस्य/ई.डी.पी.-। श्री राम प्रकाश, सहायक प्रशासनिक अधिकारी श्री रमेश चंद्र, लेखाकार श्रीमती मोनिका चौहान, कनिष्ठ अनुवादक श्री अमरेन्द्र कुमार चौरसिया, डी.ई.ओ.
परामर्श मंडल	श्री कैलाश नाथ मौर्या, मूल संकाय सदस्य/ज्ञान केंद्र श्री सत्येन्द्र कुमार सिंह, मूल संकाय सदस्य/सामान्य-2 श्री धवल किशोर सिंह, मूल संकाय सदस्य/सामान्य-1
संपादन सहयोग	श्री कौशलेश सिंह, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (सलाहकार) श्री विवेक मिश्रा, वरिष्ठ लेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक श्री वकील सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक श्री बलिराम, डी.ई.ओ.
अभिप्रेरक	श्री अंजय कुमार, स.लेप.अ./ईडीपी, श्री अनुराग श्रीवास्तव, स.लेप.अ./ओआईओएस, श्री अभिषेक कुमार जायसवाल, स.ले.अ./ज्ञान केंद्र, श्री शिवम, स.लेप.अ./ओआईओएस श्री सागर चौधरी, स.लेप.अ./ईएचआरएमएस, श्री गौरव सचान, स.लेप.अ./ईएचआरएमएस, श्री हर्षवर्धन, डीईओ/प्रशिक्षण स्कंध एवं संस्थान के समस्त अधिकारी/कर्मचारीगण ।
ग्राफिक्स एवं डिजाइनिंग	श्रीमती मोनिका चौहान, कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

गद्य

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	अधिकार और कर्तव्य	श्री धवल किशोर सिंह	1
2.	संगति के गुण-दोष	श्री कौशलेश सिंह	2 - 5
3.	डेटा गवर्नेंस	श्री नितिन सिंह	6 - 10
4.	ब्लू इकोनॉमी (नीली अर्थव्यवस्था)	श्री अभिषेक कुमार जायसवाल	11 - 13
5.	आचरण	श्री अरुण कुमार सिंह	14 - 15
6.	जीवन और संगीत	श्री विवेक मिश्रा	16 - 17
7.	भारत की नई संसद :लोकतांत्रिक प्रगति और राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक	श्रीमती मोनिका चौहान	18 - 21
8.	आदिकाल से हिंदी की विकास यात्रा	श्री अमरेन्द्र कुमार चौरसिया	22 - 23
9.	बुद्धवानी- चित्तवर्ग	श्री के.एन.मौर्या	24 - 31
10.	मेरे जीवन की एक यात्रा के दौरान दुर्घटना	श्री विवेक मिश्रा	32 - 33
11.	मेरे हनुमान जी	सुश्री आयुषी जायसवाल	34 - 37
12.	ज्योतिर्लिंग – अद्भुत प्रकाश स्तम्भ	श्री विनय सिंह	38 - 42
13.	प्रसाददानं श्रीकृष्णस्य कार्यम्	श्री राहुल	43 - 44
14.	चार धाम	सुश्री पूजा चौहान	45 - 46

पद्य

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	कविता संग्रह	सुश्री प्रिया	47
2.	तन्हाई	श्री वकील सिंह	48
3.	मन की आवाज	श्री अरुण कुमार सिंह	49

राम हित,
आई ए एवं ए एस

महानिदेशक,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,
20, सरोजिनी नायडू मार्ग,
प्रयागराज - 211001

शुभकामना संदेश

हमारे संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'ज्ञान गंगा' के द्वितीय अंक का प्रकाशन अत्यंत ही हर्ष का विषय है । राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं की अहम भूमिका होती है और इसी आशा के साथ पूर्व वर्ष से 'ज्ञान गंगा' के प्रकाशन की शुरुआत की गई ।

हमारा देश अनेक भाषाओं की समृद्ध साहित्यिक परंपराओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है । यहाँ विश्व के चार भाषा परिवारों (द्रविड़, तिब्बती, वर्मी और आग्नेय) की अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। हिंदी भारतीय आर्य भाषा परिवार की भाषा है । संस्कृत से लेकर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश से गुजरती हुई हिंदी आज देश के लगभग सभी क्षेत्रों में संपर्क भाषा के रूप में लगातार विकसित हो रही है । हिंदी हमारे देश के जनमानस की भाषा है । इसका प्रचार-प्रसार हम सभी का दायित्व है ।

'ज्ञान गंगा' के इस अंक से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ । पत्रिका को और अधिक परिष्कृत करने हेतु आप सभी के सुझाव एवं मार्गदर्शन का हृदय से सम्मान एवं स्वागत है ।

राम हित

संपादक मंडल का संदेश

इस पत्रिका का सौभाग्य है कि आप सभी इतनी बड़ी संख्या में इससे जुड़े हुए हैं। आपका यह जुड़ाव इसे नए मुकाम तक पहुंचाएगा। आपकी रचनाओं ने इस पत्रिका को बेहतर बनाया है जिसके लिए आपका हार्दिक आभार है।

आपके द्वारा भेजी गई रचनाओं को हमने आवश्यक संशोधन के पश्चात् आपकी तस्वीर के साथ प्रकाशित किया है। कृपया अपनी ओर से उत्कृष्ट लेख, कविताएं, अनुभव और तकनीकी लेखों आदि को भेजने का सिलसिला जारी रखें ताकि इसे बेहतर से उत्कृष्ट बनाया जा सके । पत्रिका के इस अंक पर भी आप सभी की प्रतिक्रियाओं का संपादक मंडल को इंतजार रहेगा ताकि हम इसे उत्कृष्टता की ओर ले जा सकें।

-संपादक मंडल (राजभाषा पत्रिका 'ज्ञान गंगा')

-क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

-महात्मा गांधी

अधिकार और कर्तव्य

श्री धवल किशोर सिंह
मूल संकाय सदस्य/सामान्य-I
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

रामायण में कर्तव्य की प्रधानता है और महाभारत में अधिकार की, इसलिये रामायण में नैतिक मूल्यों की बात है और महाभारत में न्याय की। अधिकार प्रश्न करता है कर्तव्य के पास उत्तर है, अधिकार समस्या खड़ी करता है कर्तव्य के पास समस्या का हल है, अधिकार में अहम है कर्तव्य में हम है, अधिकार दुर्भावना का जनक है तो कर्तव्य सद्भावना का, अधिकार अपूर्ण है, कर्तव्य संपूर्ण है। एक व्यक्ति का अधिकार दूसरे का कर्तव्य है। किसी की अभिव्यक्ति का अधिकार तब तक पूरा नहीं होता जब तक दूसरा उसकी अभिव्यक्ति मे बाधा न डालने के कर्तव्य का पालन करे। इसलिए अधिकार कर्तव्य पर निर्भर है, पर कर्तव्य स्वच्छन्द है। अगर सब लोग अपने कर्तव्य का पालन करने लगे तो अधिकार की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। लेकिन ये दिवास्वप्न है, यह आदर्श समाज में ही हो सकता है और जैसे रसायन शास्त्र में आदर्श गैस का सिद्धांत काल्पनिक है, वैसे ही आदर्श समाज एक परिकल्पना है।

रामायण में भी लोग कर्तव्यच्युत हुए हैं किंतु महाभारत में ज़्यादा लोग कर्तव्यच्युत हुए हैं और आज के बारे में कुछ न कहें तो ही बेहतर है। कर्तव्य दो प्रकार के हैं, एक अधिकार के सापेक्ष कर्तव्य और दूसरा निरपेक्ष या स्वच्छन्द कर्तव्य। अधिकार के सापेक्षिक कर्तव्य क़ानून के द्वारा बाध्य है। जो निरपेक्ष कर्तव्य है वे तीन तरह के होते हैं, आपका स्वयं के प्रति कर्तव्य, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य और पृथ्वी, प्रकृति तथा मानव जाति के प्रति कर्तव्य। ये कभी भी विरोधाभासी नहीं हैं, किसी व्यक्ति का स्वयं के प्रति कर्तव्य राष्ट्र के प्रति कर्तव्य के विरोध में नहीं हो सकता वैसे ही आपका राष्ट्र के प्रति कर्तव्य, कभी भी वैश्विक कर्तव्य के विपरीत नही हो सकता।

निरपेक्ष कर्तव्य भले ही क़ानूनन बाध्य नही है पर सापेक्षिक कर्तव्य से ज़्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी अवहेलना से किसी व्यक्ति विशेष को ही नहीं बल्कि समाज, राष्ट्र और पूरी पृथ्वी को क्षति पहुँचती है।

कर्तव्य पालन ही धर्म है और कर्तव्य परायणता में प्रभु श्री राम जैसा कोई दूसरा आदर्श हमें नहीं मिलेगा। उन्होने हमेशा कर्तव्य को अधिकार से पहले रखा। राजा दशरथ के बाद राजसिंहासन का अधिकार राम के पास था। लेकिन राजतिलक होने की बजाय एकाएक 14 वर्षों के लिये वन में रहने की आज्ञा पाकर राम ने उसे अपना प्रमुख कर्तव्य माना। श्री राम स्वयं वैयक्तिक, राष्ट्रीय और वैश्विक कर्तव्य के आदर्श हैं। मैथिलीशरण गुप्त ने 'यशोधरा' में राम के आदर्शमय महान जीवन के विषय मे सत्य लिखा है-

राम! तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है॥

संगति के गुण-दोष

श्री कौशलेश सिंह,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (सलाहकार),
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

संगति का शाब्दिक अर्थ होता है 'सह गति' अर्थात 'साथ-साथ चलना या रहना', परन्तु संगति के गुण दोष एवं प्रभाव बहुत ही व्यापक हैं। जीव-निर्जीव,चर-अचर सभी पर संगति का परस्पर प्रभाव पड़ता है, जैसे मनुष्य जिस प्रकार के वस्त्र, आभूषण, हीरे, मणि अथवा मोती इत्यादि धारण करता है उसके तन पर अथवा स्वास्थ्य पर उसी तरह का प्रभाव पड़ता है। हवा भी गर्मी व ठंड की संगति पाकर वैसी ही बन जाती है अर्थात् हम जिस तरह की संगति में रहते हैं, उसका हम पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है। मानव समाज के परिप्रेक्ष्य में संगति मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है- सत्संगति अर्थात् सज्जन लोगों की संगति और कुसंगति अर्थात् दुर्जन लोगों की संगति।

मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में संगति और संस्कार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अच्छे चरित्र एवं व्यक्तित्व के निर्माण के लिए अच्छी संगति (सत्संगति) और अच्छे संस्कार (सुसंस्कार) का होना बहुत जरुरी है। सुसंस्कार हमारे पूर्व जन्मों के फल की देन है लेकिन सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है जो भगवान की कृपा से ही प्राप्त होती है। सत्संगति का हमारे व्यक्तित्व पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मनुष्य जब बुद्धिमान्, विद्वान, गुणवान् एवं सज्जन व्यक्ति के सम्पर्क में आता है, तब उसमें स्वयं ही अच्छे गुणों का उदय होता है और उसके दुर्गुण नष्ट हो जाते हैं। सत्संगति से मनुष्य की कलुषित वासनायें, बुद्धि की अक्षमता और दुराचरण दूर हो जाते हैं। जीवन में उसे सुख और शान्ति प्राप्त होती है तथा समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। साधारण से साधारण और निम्न से निम्न कोटि का व्यक्ति भी सत्पुरुषों की संगति से उच्च स्थान प्राप्त कर लेता है।

इसके विपरीत 'कुसंगति' अर्थात् बुरी संगति में रहने वाले लोगों का व्यक्तित्व निर्माण भी अच्छे से नहीं हो पाता तथा बुरी संगति के कारण समाज में उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है। बुरे और नीच लोगों के साथ रहने वाले लोग अपना नुकसान तो करते ही हैं, समाज और देश के लिए भी घातक बन जाते हैं। ऐसे लोगों का शीघ्र ही विनाश हो जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति गुण व दोष दोनों से व्याप्त होता है। विवेकी व्यक्ति सदैव गुणग्राही होता है और दोषों को त्याग देता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति गुणों को त्याग कर दोष ग्रहण करता है। मनुष्य पर गुण व दोषों का प्रभाव संगति से पड़ता है। सज्जनों की संगति में गुण व दुर्जनों की संगति में दोष ही दोष मिलते हैं। मनुष्य में गुणों की प्राप्ति दो प्रकार से हो सकती है – प्रथम श्रेष्ठ, सज्जन एवं गुणवान व्यक्तियों की अनुभूत शिक्षा ग्रहण करने तथा उनके साथ अपना सम्पर्क रखने आदि से तथा दूसरा पुस्तकों आदि के अध्ययन से। परन्तु मनुष्य में सजीवता रहने के कारण मानवीय सत्संगति का प्रभाव तुरन्त और चिरस्थायी होता है, जबकि पुस्तकों आदि का विलम्ब से और अल्पकालिक होता है। पुस्तकों के सत्संग में स्थान या समय की बाधा नहीं रहती। आज से हजारों वर्ष पूर्व के विद्वानों के साथ हम उसी प्रकार का विचार – विमर्श कर सकते हैं, जिस प्रकार आधुनिक विद्वानों के साथ कर सकते हैं। उनके ग्रन्थ–रत्नों से हम उनकी संगति का अमूल्य लाभ उठा सकते हैं।

यदि हम पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, तो बाल्मीकि रामायण, वेदव्यास की भागवत्, श्रीकृष्ण की गीता, विदुरनीति, चाणक्य नीति, तुलसी की राम चरित मानस आदि ग्रन्थों के अध्ययन से हम जब चाहें अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं। परन्तु सत्संगति का प्रभाव अद्वितीय है। हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का कहना था कि एक अच्छे मित्र की संगति 100 पुस्तकों के पढ़ने के बराबर है। 100 पुस्तकें पढ़ने से जितनी शिक्षा हम ग्रहण कर पाते हैं, उतनी ही शिक्षा हमें एक अच्छे मित्र की संगति से प्राप्त हो जाती है।

इसके विपरीत बुरी संगति हमारी मति को भ्रष्ट कर देती है। बुरी संगति के कारण कई बार हमें ऐसे कार्य करने के लिए भी उत्प्रेरित होना पड़ता है जिसे कभी सपने में भी नहीं सोचा था। उदाहरण स्वरूप कर्ण, जो एक दानवीर और सर्वश्रेष्ठ योद्धा था, परन्तु दूषित विचार वाले दुर्योधन से मित्रता के कारण उसको कई बार ऐसे कार्य करने पड़े जिसके लिए उसकी स्वयं की आत्मा उसे धिक्कारती थी। महर्षि बाल्मीकि रत्नाकर नामक ब्राह्मण थे जो भीलों की संगति में रहकर डाकू बन गए, परंतु बाद में वही डाकू देव ऋषि नारद की संगति में आने से तपस्वी बनकर महर्षि बाल्मीकि के नाम से प्रसिद्ध हुए। ऐसे ही अन्गुलिमार नामक भयंकर डाकू था जो भगवान बुद्ध की संगति पाकर महात्मा बन गया। गंदे नाले का जल भी पवित्र गंगाजी में मिलकर गंगाजल बन जाता है। अतः एक ही व्यक्ति या पदार्थ जब अलग-अलग स्वभाव के लोगों के संपर्क में आते हैं तो उसका अलग-अलग प्रभाव पड़ता है।

भगवान की कृपा होने पर ही अच्छी संगति प्राप्त होती है। तुलसीदासजी ने कहा है- **'बिनु सतसंग बिबेक न होई।, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।'** अच्छी संगति ही एक ऐसी संजीवनी है जो मानव जीवन को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाती है। इसलिए हमें सदा यही प्रयत्न करना चाहिए कि हम सत्पुरुषों के साथ अपना समय व्यतीत करें। सत्संगति से आत्मा पवित्र हो जाती है। जीवन में स्वाभिमान, सद्भावना और सकारात्मक सोच जैसे गुणों का उदय होता है। सज्जन पुरुषों का साथ हमें कठिन परिस्थितियों से निकाल कर हमारे लक्ष्य तक पहुँचाता है। हम जैसे लोगों के साथ समय बिताते हैं धीरे-धीरे उन्हीं लोगों के गुण हमारे अन्दर आ जाते हैं। कुसंगति से लाभ की आशा करना व्यर्थ है। कुसंगति के प्रभाव से मनस्वी पुरुष भी अच्छे कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं। वे चाहकर भी अच्छा कार्य नहीं कर पाते। जो लोग कुसंगति में पड़ जाते हैं उनके प्रगति के मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं, उनका मस्तिष्क अच्छे-बुरे का भेद करने में असमर्थ हो जाता है। उनमें अनुशासनहीनता आ जाती है। कहते हैं कि जैसी संगत वैसी रंगत, यानी हम यदि संगत अच्छी करेंगे तो हमें अपने जीवन में परिणाम भी अच्छे मिलेंगे और यदि हम बुरी संगत करेंगे तो हमें अपने जीवन में बुरे परिणाम मिलेंगे। इसलिए मानव को सज्जन पुरुषों की संगति करनी चाहिए तथा दुष्ट की संगति त्याग देनी चाहिए।

मानव जीवन पर संगति के महत्व का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि लगभग हर युग में, काल में एवं शास्त्रों में श्रेष्ठ पुरुषों, विद्वानों एवं कवियों द्वारा संगति पर अथाह ज्ञान प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान के बदलते समाज में हो सकता है हमारे बच्चों पर या कुछ लोगों पर हमारी बातों का प्रभाव न पड़े इसलिए संगति पर श्रेष्ठ पुरुषों, विद्वानों एवं कवियों के कुछ कथन उदाहरण स्वरूप दिए गए हैं।

संगत से गुण होत है, संगत ही गुण जाय। बाँस, फाँस मिसरी सबै, एकै भाव बिकाय ।।

कबीरा संगति साधु की, हरै और की व्याधि। ओछी संगति नीच की, आठों पहर उपाधि।।

कबीरा संगत साधु की, नित प्रति कीजै जाय। दुरमति दूर बहावसी, देसी सुमति बताय ।।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी सों भी आध। कबिरा सङ्गति साधु की, कटे कोटि अपराध।।

बसि कुसंग चाहत कुशल, यह रहीम अफ़सोस। महिमा घटी समुद्र की रावन बस्यो पड़ोस।।

काजर की कोठरी में कैसो ही सयानो जाय, एक लीक काजर की लागिहे पै लागिहै ।

रहिमन नीचन संग बसि लगत कलंक न काहि, दूध कलारिन हाँथ लखि सब समुझहिं मद ताहि ।

कदली सीप भुजंग मुख स्वाति एक गुण तीन।जैसी संगति बैठिए तैसोई फल दीन।।

सठ सुधरहि सत्संगति पाई, पारस परस कुधातु सुहाई ।

ग्रह भेसज जल पवन पट पाई कुजोग सुजोग। होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलक्षन लोग॥

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग। तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥

उपरोक्त कथनों के अपवादस्वरूप भी रहीमदास जी का एक प्रसिद्ध दोहा है-

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग

चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ।।

अर्थात् जो व्यक्ति उत्तम प्रकृति का होता है और अपने स्वभाव के प्रति दृढ़ संकल्पित होता है उस पर बुरी संगति का कोई असर नहीं पड़ता जैसे चंदन के वृक्ष में सर्प लिपट जाता है फिर भी चंदन से खुशबू ही आती है। यदि हमारा व्यक्तित्व अंदर से मजबूत है और हम अपने स्वभाव के प्रति दृढ़ संकल्पित है तो कुछ समय के लिए बुरे चरित्र वाले लोगों की संगति हो जाने पर भी हम बचे रह सकते हैं, लेकिन उसका दुष्प्रभाव कुछ न कुछ तो अवश्य पड़ेगा।

इसी प्रकार तुलसीदास जी का भी कथन सज्जन एवं दुर्जन (नीच) दोनों के लिए है-

बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥

नींच निचाई नहि तजै, सज्जनहूँ के संग। तुलसी चन्दन विटप बसि बिनु विष भय न भुजंग॥

सत्संग की महिमा का उत्तम वर्णन निम्न श्लोकों में किया गया है-

दूरीकरोति कुमतिं विमलीकरोति चेतश्चिरंतनमधं चुलुकीकरोति ।

भूतेषु किं च करुणां बहुलीकरोति संगः सतां किमु न मंगलमातनोति ॥

सत्संग कुमति को दूर करता है, चित्त को निर्मल बनाता है। चिरकाल अर्थाता लंबे समय के पाप को अंजलि में समा जाने योग्य बनाता है, करुणा का विस्तार करता है; सत्संग मानव को कौन सा मंगल नहीं देता।

कल्पद्रुमः कल्पितमेव सूते, सा कामधुक कामितमेव दोग्धि।

चिन्तामणिश्चिन्तितमेव दत्ते, सतां हि संगः सकलं प्रसूते ॥

कल्पवृक्ष कल्पना किया हुआ ही देता है, कामधेनु इच्छित वस्तु ही देती है, चिंतामणि जिसका चिंतन करते हैं वही देती है, लेकिन सत्संग तो सब कुछ देता है।

दर्शनध्यानसंस्पर्शैर्मत्सी कूर्मी च पक्षिणी ।

शिशुं पालयते नित्यं तथा सज्जनसंगतिः ।।"

अर्थात् जैसे मछली दर्शन से, कछवी ध्यान से और पक्षिणी स्पर्श से अपने-अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है, ऐसे ही श्रेष्ठ पुरुषों की संगति मनुष्यों का पालन-पोषण करती है।

सत्संग की अति उत्तम महिमा का वर्णन आचार्य भर्तृहरि ने नीति शतक के निम्न श्लोक में की है:

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं

मान्नोनतिं दिशति पापमपकरोति ।

चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं

सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥

सत्संगति बुद्धि की जड़ता को दूर करती है, वाणी में सत्य का आधान करती है अर्थात् सत्यवादी बनने की प्रेरणा प्रदान करती है, सम्मान और उन्नति प्रदान करती है,पाप को दूर करती है, हृदय को प्रसन्न करती है और दिशाओं में

कीर्ति लाती है। अब आप ही बताएं कि सत्संगति मनुष्यों का कौन सा भला नहीं करती। अर्थात् सत्पुरुषों की संगति से मनुष्य निरन्तर प्रगति प्राप्त करता रहता है। अतः सत्संगति बहुत ही कल्याणकारी होती है।

इसी प्रकार कुसंगति के दोषों का वर्णन निम्न श्लोक में किया गया हैः

पापं वर्धयते चिनोति कुमतिं कीर्त्यंगना नश्यति
धर्मं ध्वंसयते तनोति विपदं सम्पत्तिमुन्मर्दति ।
नीतिं हन्ति विनीतिमत्र कुरुते कोपं धुनीते शमम्
किं वा दुर्जन संगतिं न कुरुते लोकद्वयध्वंसिनी ॥

कुसंगति पाप को बढ़ाती है, कुमति का संचार करती है, कीर्तिरुप अंगना का नाश करती है, धर्म का ध्वंस करती है, विपत्ति का विस्तार करती है, संपत्ति का मर्दन करती है, नीति को हरती है, विनीति को कोप कराती है, शांति को हिलाती है; दोनों लोक का नाश करने वाली दुर्जन-संगति क्या नहीं करती। अर्थात् दुर्जन संगति बहुत ही विनाशकारी होती है।

दुर्जनः परिहर्तव्यः विध्ययालंकृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसो न भयंकरः ॥

अर्थात् दुर्जन विद्या से अलंकृत हो फ़िर भी उसका त्याग करना चाहिए । मणि से भूषित सर्प क्या भयंकर नहीं होता।

उक्त कथनों से स्पष्ट है कि मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए सत्संगति अति आवश्यक है और कुसंगति त्याज्य है। सत्संग की महिमा अनन्त है। क्या विद्यार्थी और क्या गृहस्थ, क्या बालक और क्या वृद्ध, सत्संग से सभी लाभान्वित होते हैं। सत्संगति के प्रभाव से साधारण मनुष्य भी महान् बन जाते हैं। परन्तु इतनी बात अवश्य है कि सत्संग का प्रभाव देर में होता है और कुसंगति का प्रभाव तुरन्त। विद्यार्थियों को सदैव अच्छे व्यक्तियों से सम्पर्क रखना चाहिये। इससे वे निश्चय ही सदाचारी, आज्ञापालक और अनुशासन–प्रिय बनेंगे। विद्यार्थियों की निर्दोष और निर्मल बुद्धि पर कहीं कुसंगति का वज्रपात न हो जाये, यह प्रतिक्षण देखना माता–पिता का कर्तव्य है। लगभग दो तीन दशक पूर्व हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में केवल मानवीय संगति एवं पुस्तकों के अध्ययन से प्राप्त गुण दोषों का ही प्रभाव पड़ता था, परन्तु वर्तमान समय में इन्टरनेट, सोशल मीडिया इत्यादि माध्यमो से गुण-दोषों की नदियाँ बह रही हैं, जिसका मानव जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ रहा है। आज इस युग में जहाँ मानव समाज के पास भटकावे के अनेक साधन हैं और विद्यार्थियों के पास इतना समय व समझ नहीं कि वह विचार कर सके कि क्या उचित है अथवा अनुचित । ऐसे में अपने बच्चों को कुसंगति के प्रभाव से बचाने हेतु माता–पिता की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।

डेटा गवर्नेंस

श्री नितिन सिंह,
संकाय सदस्य (ई.डी.पी.)
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

डेटा गवर्नेंस एक संगठन में महत्वपूर्ण डेटा की पहचान करने, इसकी उच्च गुणवत्ता को सुनिश्चित करने और व्यवसाय के लिए इसके मूल्य में सुधार करने का अभ्यास है।

डेटा गवर्नेंस अपने जीवनचक्र के दौरान डेटा को प्रबंधित करने के लिए एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण है - अधिग्रहण से लेकर उपयोग एवं निपटान तक। डेटा गवर्नेंस प्रोग्राम स्पष्ट रूप से नीतियों, प्रक्रियाओं, जिम्मेदारियों और आसपास की डेटा गतिविधियों को नियंत्रित करता है। यह कार्यक्रम यह सुनिश्चित करता है कि जानकारी का संकलन, रखरखाव, उपयोग और प्रसार इस तरह से की जाती है जो संगठन की डेटा अखंडता और सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करती है साथ ही, यह कर्मचारियों को डेटा को उसकी पूरी क्षमता तक खोजने और उपयोग करने का अधिकार देता है। डेटा के प्रबंधन और शासन को किसी भी संगठन के लिए अत्यंत महत्व के साथ माना जाना चाहिए।

डेटा गवर्नेंस एक संगठन के भीतर उस डेटा के जीवनचक्र के दौरान उच्च गुणवत्ता वाले डेटा को प्रदान करने और उसकी सुरक्षा करने में मदद करने की क्षमता है। इसमें डेटा अखंडता, डेटा सुरक्षा, उपलब्धता और निरंतरता शामिल है। डेटा गवर्नेंस में लोग, प्रक्रियाएं और तकनीक शामिल हैं जो पूरे संगठन में डेटा के उचित प्रबंधन को सक्षम करने में मदद करते हैं।

डेटा गवर्नेंस कार्यक्रम में निम्नलिखित नीतियां शामिल हैं:-

•डेटा और डेटा संपत्तियों के लिए जिम्मेदार लोगों के लिए जवाबदेही को चित्रित करना।

• डेटा के प्रबंधन और सुरक्षा के लिए संगठन में उपयुक्त स्तरों को जिम्मेदारी सौंपना।

• डेटा की सुरक्षा के लिए सुरक्षा उपायों की पहचान करना।

• डेटा की गुणवत्ता और सटीकता प्रदान करने के लिए अखंडता नियंत्रण प्रदान करना।

डेटा गवर्नेंस पर सरकार की नीतियां- डेटा गवर्नेंस पॉलिसी एक दस्तावेज है जो औपचारिक रूप से रेखांकित करता है कि संगठनात्मक डेटा को कैसे प्रबंधित और नियंत्रित किया जाएगा।

डेटा शासन नीतियों द्वारा कवर किए गए कुछ सामान्य क्षेत्र हैं:-

•डेटा की गुणवत्ता - यह सुनिश्चित करना कि डेटा सही, सुसंगत और त्रुटि से मुक्त हो, जिसने उपयोग और विश्लेषण को न बाधित किया हो।

•डेटा उपलब्धता - यह सुनिश्चित करना कि डेटा उपलब्ध है और इसकी आवश्यकता वाले व्यावसायिक कार्यों द्वारा उपभोग करना आसान है।

डेटा उपयोगिता - यह सुनिश्चित करना कि डेटा स्पष्ट रूप से संरचित, प्रलेखित और लेबल किया गया है, आसान खोज और पुनर्प्राप्ति को सक्षम बनाता है और व्यावसायिक उपयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले टूल के साथ संगत है।

•डेटा अखंडता - यह सुनिश्चित करना कि डेटा विभिन्न प्लेटफार्मों पर संग्रहीत, परिवर्तित, स्थानांतरित और देखे जाने पर भी इसके आवश्यक गुणों को बनाए रखता है।

•डेटा सुरक्षा - यह सुनिश्चित करना कि डेटा को उसकी संवेदनशीलता के अनुसार वर्गीकृत किया गया है और जानकारी की सुरक्षा और डेटा हानि और रिसाव को रोकने के लिए प्रक्रियाओं को परिभाषित करना।

डेटा स्टीवर्ड:- डेटा स्टीवर्ड एक संगठनात्मक भूमिका है जो डेटा गवर्नेंस पॉलिसी को लागू करने के लिए जिम्मेदार है। डेटा स्टीवर्ड आमतौर पर विषय विशेषज्ञ होते हैं जो किसी विशिष्ट व्यावसायिक कार्य या विभाग द्वारा उपयोग किए जाने वाले डेटा से परिचित होते हैं। वे सामग्री और मेटाडेटा दोनों डेटा तत्वों की फिटनेस सुनिश्चित करते हैं, डेटा को प्रशासित करते हैं और नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हैं।

डेटा गवर्नेंस बनाम डेटा प्रबंधन:- डेटा गवर्नेंस एक रणनीति है जिसका उपयोग किया जाता है जबकि डेटा प्रबंधन डेटा के मूल्य की रक्षा के लिए उपयोग की जाने वाली प्रथा है। डेटा गवर्नेंस रणनीति बनाते समय, आप डेटा प्रबंधन प्रथाओं को शामिल और परिभाषित करते हैं। डेटा गवर्नेंस के उदाहरण और नीतियां निर्देशित करती हैं कि तकनीकों और समाधानों का उपयोग कैसे किया जाता है, जबकि प्रबंधन कार्यों को प्राप्त करने के लिए इन समाधानों का लाभ उठाता है।

डेटा गवर्नेंस फ्रेमवर्क:- एक डेटा गवर्नेंस फ्रेमवर्क एक संरचना है जो एक संगठन को जिम्मेदारियां सौंपने, निर्णय लेने और उद्यम डेटा पर कार्रवाई करने में मदद करता है। डेटा गवर्नेंस फ्रेमवर्क को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

•कमान और नियंत्रण - ढांचा कुछ कर्मचारियों को डेटा स्टीवर्ड के रूप में नामित करता है, और उन्हें डेटा शासन जिम्मेदारियों को लेने की आवश्यकता होती है।

•पारंपरिक - ढांचा स्वैच्छिक आधार पर बड़ी संख्या में कर्मचारियों को डेटा स्टीवर्ड के रूप में नामित करता है, कुछ अतिरिक्त जिम्मेदारियों के साथ "महत्वपूर्ण डेटा स्टीवर्ड" के रूप में सेवा करते हैं।

•नॉन-इनवेसिव - फ्रेमवर्क लोगों को उनके मौजूदा काम और डेटा से संबंध के आधार पर डेटा स्टीवर्ड के रूप में पहचानता है; हर कोई जो डेटा बनाता और संशोधित करता है, उस डेटा के लिए डेटा स्टीवर्ड बन जाता है।

डेटा गवर्नेंस फ्रेमवर्क के आवश्यक तत्वों में शामिल हैं:

•फंडिंग और प्रबंधन समर्थन - एक डेटा गवर्नेंस फ्रेमवर्क तब तक अर्थपूर्ण नहीं है जब तक कि यह एक आधिकारिक कंपनी नीति के रूप में प्रबंधन द्वारा समर्थित न हो।

•उपयोगकर्ता जुड़ाव - यह सुनिश्चित करना कि जो लोग डेटा का उपभोग करते हैं वे समझते हैं और डेटा शासन नियमों के साथ सहयोग करेंगे।

•डेटा गवर्नेंस काउंसिल - डेटा गवर्नेंस फ्रेमवर्क को परिभाषित करने और संगठन में इसे लागू करने में मदद करने के लिए जिम्मेदार एक औपचारिक निकाय है ।

डेटा गवर्नेंस रणनीति:- डेटा गवर्नेंस रणनीति संगठन के डेटा गवर्नेंस फ्रेमवर्क की सामग्री को सूचित करती है। संगठनात्मक डेटा के प्रत्येक सेट के लिए आपको इसे परिभाषित करने की आवश्यकता है:

•कहाँ: जहाँ यह भौतिक रूप से संग्रहीत है।

•कौन: किसके पास इसकी पहुंच है या होनी चाहिए।

•क्या: "ग्राहक", "विक्रेता", "लेन-देन" जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं की परिभाषा।

•कैसे: डेटा की वर्तमान संरचना क्या है?

•गुणवत्ता: स्रोत डेटा और उपभोज्य डेटा सेट की वर्तमान और वांछित गुणवत्ता।

•लक्ष्य: हम इस डेटा का क्या करना चाहते हैं?

•आवश्यकताएँ: लक्ष्यों को पूरा करने के लिए डेटा के लिए क्या होना चाहिए।

डेटा गवर्नेंस पॉलिसी क्या है और यह महत्वपूर्ण क्यों है?

डेटा गवर्नेंस नीतियां दिशानिर्देश हैं जिनका उपयोग आप यह सुनिश्चित करने के लिए कर सकते हैं कि आपके डेटा और संपत्तियों का उचित रूप से उपयोग किया जाता है और लगातार प्रबंधित किया जाता है। इन दिशानिर्देशों में आमतौर पर गोपनीयता, सुरक्षा, पहुंच और गुणवत्ता से संबंधित नीतियां शामिल होती हैं। दिशानिर्देश नीतियों और अनुपालन उपायों को लागू करने वालों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को भी कवर करते हैं।

इन नीतियों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि संगठन उच्च गुणवत्ता वाले डेटा को बनाए रखने और सुरक्षित रखने में सक्षम हैं। शासन की नीतियां आपकी व्यापक शासन रणनीति का आधार बनती हैं और आपको यह स्पष्ट रूप से परिभाषित करने में सक्षम बनाती हैं कि शासन कैसे किया जाता है।

डेटा गवर्नेंस भूमिकाएँ:-

डेटा गवर्नेंस ऑपरेशंस कई संगठनात्मक सदस्यों द्वारा निष्पादित किए जाते हैं, जिनमें आईटी कर्मचारी, डेटा प्रबंधन पेशेवर, व्यावसायिक अधिकारी और अंतिम उपयोगकर्ता शामिल हैं। डेटा गवर्नेंस भूमिकाओं को किसे भरना चाहिए, इसके लिए कोई सख्त मानक नहीं है, लेकिन ऐसी मानक भूमिकाएँ हैं जिन्हें संगठन लागू करते हैं।

मुख्य डेटा अधिकारी:-

मुख्य डेटा अधिकारी आमतौर पर वरिष्ठ अधिकारी होते हैं जो आपके शासन कार्यक्रम की देखरेख करते हैं। यह भूमिका एक प्रोग्राम एडवोकेट के रूप में कार्य करने, स्टाफिंग को सुरक्षित करने के लिए काम करने, परियोजना के लिए फंडिंग और अनुमोदन और कार्यक्रम की प्रगति की निगरानी के लिए जिम्मेदार है।

डेटा गवर्नेंस मैनेजर और टीम:-

डेटा प्रशासन प्रबंधक मुख्य डेटा अधिकारी की भूमिका से आच्छादित हो सकते हैं या अलग कर्मचारी हो सकते हैं। यह भूमिका आपकी डेटा गवर्नेंस टीम के प्रबंधन और कार्यों के वितरण और प्रबंधन में अधिक प्रत्यक्ष भूमिका निभाने के लिए ज़िम्मेदार है। यह व्यक्ति शासन प्रक्रियाओं के समन्वय में मदद करता है, प्रशिक्षण सत्रों और बैठकों का नेतृत्व करता है, प्रदर्शन मेट्रिक्स का मूल्यांकन करता है और आंतरिक संचार का प्रबंधन करता है।

डेटा गवर्नेंस समिति:-

डेटा गवर्नेंस कमेटी एक निरीक्षण समिति है जो गवर्नेंस टीम और मैनेजर के कार्यों को अनुमोदित और निर्देशित करती है। यह समिति आम तौर पर डेटा मालिकों और व्यावसायिक अधिकारियों से बनी होती है। वे डेटा गवर्नेंस पेशेवरों की सिफारिशें लेते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रक्रियाएँ और रणनीतियाँ व्यावसायिक लक्ष्यों के साथ संरेखित हों। यह समिति डेटा या शासन से संबंधित व्यावसायिक इकाइयों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए भी जिम्मेदार है।

डेटा स्टीवर्ड:- डेटा स्टीवर्ड व्यक्तिगत टीम के सदस्य होते हैं जो डेटा की देखरेख और नीतियों और प्रक्रियाओं को लागू करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। ये भूमिकाएं आमतौर पर आईटी या डेटा पेशेवरों द्वारा डेटा डोमेन और संपत्ति पर विशेषज्ञता के साथ भरी जाती हैं। डेटा स्टीवर्ड इंजीनियर, गुणवत्ता विश्लेषक, डेटा मॉडेलर और डेटा आर्किटेक्ट के रूप में भी भूमिका निभा सकते हैं।

डेटा गवर्नेंस बेस्ट प्रैक्टिस:- एक डेटा गवर्नेंस पहल को व्यापक प्रबंधन समर्थन और उन हितधारकों से स्वीकृति के साथ शुरू होना चाहिए जो डेटा के स्वामी और प्रबंधन करते हैं (जिन्हें डेटा संरक्षक कहा जाता है)।डेटा के एक सेट पर एक छोटी पायलट परियोजना के साथ शुरू करने की सलाह दी जाती है, जो विशेष रूप से समस्याग्रस्त है और शासन की आवश्यकता है, हितधारकों और प्रबंधन को दिखाने के लिए कि क्या शामिल है, और डेटा शासन गतिविधि के निवेश पर प्रतिफल प्रदर्शित करता है।

पूरे संगठन में डेटा गवर्नेंस शुरू करते समय, समय बचाने के लिए टेम्प्लेट, मॉडल और मौजूदा टूल का उपयोग करें और अपने स्वयं के डेटा के लिए गुणवत्ता, पहुंच और अखंडता में सुधार करने के लिए संगठनात्मक भूमिकाओं को सशक्त बनाएं। डेटा गवर्नेंस टूल्स का मूल्यांकन और उपयोग करने पर विचार करें जो प्रक्रियाओं को मानकीकृत करने और मैन्युअल गतिविधियों को स्वचालित करने में मदद कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि डेटा की गुणवत्ता की जिम्मेदारी लेने के इच्छुक डेटा प्रबंधकों का एक समुदाय बनाएं। अधिमानतः, ये वे व्यक्ति होने चाहिए जो पहले से ही डेटा सेट बनाते और प्रबंधित करते हैं, और संपूर्ण संगठन के लिए डेटा को उपयोगी बनाने के मूल्य को समझते हैं।

डेटा गवर्नेंस:- इलेक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (भारत सरकार)

डिजिटल इंडिया ने भारतीय अर्थव्यवस्था का डिजिटलीकरण किया है और विशेष रूप से भारतीय नागरिकों और सामान्य रूप से शासन के जीवन को बदल दिया है। प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के उपयोग से करोड़ों भारतीयों के जीवन और शासन के उनके अनुभव में काफी वृद्धि हुई है। इसके साथ ही, डिजिटल इंडिया ने डिजिटल स्पेस में नवाचार और उद्यमिता को भी जारी किया है।

प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास के साथ-साथ, विशेष रूप से सोशल मीडिया और मोबाइल ऐप्स के बढ़ते उपयोग के साथ, व्यक्तिगत डेटा और व्यक्ति की गोपनीयता की रक्षा करना महत्वपूर्ण है। सभी हितधारकों के बीच विश्वास बनाए रखने, व्यापार करने में आसानी और भारत में आईटी क्षेत्र के आगे विकास के लिए भारत में एक मजबूत डेटा सुरक्षा ढांचा होना अनिवार्य हो गया है।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने "डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन बिल -2022" का मसौदा तैयार किया है, जिसमें एक ओर नागरिक (डिजिटल नागरिक) के अधिकारों और कर्तव्यों का विवरण दिया गया है और दूसरी ओर डेटा फिड्यूशरी के दायित्वों का विवरण दिया गया है।

राष्ट्रीय डेटा गवर्नेंस फ्रेमवर्क नीति:- सरकार, शासन और अर्थव्यवस्था का डिजिटलीकरण तीव्र गति से हो रहा है। भारत की अनूठी प्लेटफॉर्माइजेशन रणनीति दुनिया को दिखा रही है कि कैसे सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से सार्वजनिक सेवा वितरण और शासन को बड़े पैमाने पर बदला जा सकता है। ये सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म नागरिकों को सशक्त बना रहे हैं, सरकार-नागरिक जुड़ाव बढ़ा रहे हैं, डेटा-संचालित शासन चला रहे हैं और समावेशी विकास की ओर अग्रसर हैं।

दुनिया के सबसे बड़े सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से, भारत लोगों के जीवन को बदलने, शासन में सुधार करने और जीवंत नवाचार इको-सिस्टम बनाने के लिए प्रौद्योगिकी की तैनाती में दुनिया का प्रमुख देश बन रहा है।

कोविड-19 महामारी के दौरान, डिजिटल गवर्नेंस ने महामारी के प्रति भारत की लचीली प्रतिक्रिया और जीवन, आजीविका और अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव में एक बड़ी भूमिका निभाई। कोविड-19 के बाद के युग में, सरकार

का यह डिजिटलीकरण तेजी से बढ़ रहा है। इस त्वरित डिजिटलीकरण के साथ, उत्पन्न डेटा की मात्रा और गति भी तेजी से बढ़ रही है। डिजिटल नागरिक के रूप में सरकार और शासन के साथ नागरिकों के अनुभव और जुड़ाव को बेहतर बनाने के लिए इस डेटा का उपयोग किया जा सकता है।

हालांकि, डिजिटल सरकारी डेटा वर्तमान में विभिन्न सरकारी संस्थाओं में अलग-अलग और असंगत तरीकों से प्रबंधित, संग्रहीत और एक्सेस किया जाता है, इस प्रकार डेटा-संचालित प्रशासन की प्रभावकारिता को कम करता है, और डेटा साइंस, एनालिटिक्स और एआई के एक अभिनव पारिस्थितिकी तंत्र को इसके पूर्ण रूप से उभरने से रोकता है। संभावना। अधिक प्रभावी डिजिटल सरकार, सार्वजनिक भलाई और नवाचार के लिए इस डेटा की शक्ति का उपयोग किया जाना चाहिए, इस प्रकार एक राष्ट्रीय डेटा गवर्नेंस फ्रेमवर्क पॉलिसी (एनडीजीएफपी) की आवश्यकता होती है।

डिजिटल सरकार के मूल में भारत के नागरिकों को बेहतर और अधिक उत्तरदायी शासन प्रदान करना है। यह बदले में शासन, कार्यक्रम मूल्यांकन और सेवा वितरण के प्रति डेटा-संचालित दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम होने पर निर्भर करता है। इसे ध्यान में रखते हुए, डेटा-आधारित शासन सरकार की डिजिटल सरकार दृष्टि की आधारशिला है।

इस नीति का उद्देश्य डेटा-आधारित शासन को अधिकतम करने और डेटा-आधारित नवाचार को उत्प्रेरित करने के उद्देश्य से डिजिटल सरकार की पूरी क्षमता का एहसास करना है जो सरकारी सेवाओं और नागरिकों को उनकी डिलीवरी को बदल सकता है, विशेष रूप से सामाजिक महत्व के क्षेत्रों में जिसमें कृषि, स्वास्थ्य देखभाल, कानून शामिल हैं। और न्याय, शिक्षा, दूसरों के बीच में।

यह नीति गैर-व्यक्तिगत डेटा आधारित भारत डेटासेट कार्यक्रम भी लॉन्च करती है और यह सुनिश्चित करने के लिए तरीकों और नियमों को संबोधित करती है कि गैर-व्यक्तिगत डेटा और सरकारी और निजी दोनों संस्थाओं से अज्ञात डेटा रिसर्च और इनोवेशन इको-सिस्टम द्वारा सुरक्षित रूप से उपलब्ध हैं।

नीति के उद्देश्य:- सरकारी डेटा के संग्रह, प्रसंस्करण, भंडारण, पहुंच और उपयोग के लिए मानकीकृत दिशानिर्देशों, नियमों और मानकों के माध्यम से सरकारी डेटा संग्रह और प्रबंधन प्रक्रियाओं और प्रणालियों को बदलने और आधुनिकीकरण करने के लिए - डेटा के प्रति संपूर्ण सरकारी दृष्टिकोण के माध्यम से शासन में सुधार के उद्देश्य से नेतृत्व वाला शासन।

भारत के डेटासेट का एक बड़ा भंडार बनाकर जीवंत एआई और डेटा आधारित अनुसंधान और स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम और उत्प्रेरित करना। यह भारतीय डेटासेट के विकास को सुनिश्चित करने के लिए अज्ञात गैर-व्यक्तिगत डेटा के निर्माण और उस तक पहुंच के लिए दिशानिर्देश, नियम और मानक स्थापित करके प्राप्त किया जाएगा। यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और एनालिटिक्स इकोसिस्टम के लिए उत्प्रेरक होगा,जो बदले में भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था के गतिज समर्थक होंगे जो भारत के डेटासेट का एक बड़ा भंडार होगा। यह दिशानिर्देश, नियम और स्थापित करके प्राप्त किया जाएगा।

भारतीय डेटासेट के विकास को सुनिश्चित करने के लिए अज्ञात गैर-व्यक्तिगत डेटा के निर्माण और उस तक पहुंच के मानक। यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और एनालिटिक्स इकोसिस्टम के लिए उत्प्रेरक होगा, जो बदले में भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था के गतिज समर्थक होंगे।

ब्लू इकोनॉमी (नीली अर्थव्यवस्था)

श्री अभिषेक कुमार जायसवाल
संकाय सदस्य (ज्ञान केन्द्र)
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

संदर्भ: दुनिया भर में करीब 3 अरब से अधिक लोग जीवित रहने के लिए महासागरों पर निर्भर हैं। पृथ्वी पर 35% लोग समुद्र तट के आसपास रहते हैं। खाद्य सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन महासागरों और तटीय क्षेत्रों के उपयोग द्वारा संभव हो सकता है।

संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों ने 2015 में एक सतत विकास रणनीति स्थापित की जो 17 सतत विकास लक्ष्यों (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स - एस.डी.जी.) पर आधारित है। 17 लक्ष्य, जोकि 2030 तक पूरा होने के लिए निर्धारित हैं, विश्व शांति और उन्नति के लिए एक विश्वव्यापी दिशानिर्देश प्रदान करते हैं। लक्ष्य सं. 14 "पानी के नीचे का जीवन" सतत विकास के लिए महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों के संरक्षण और सतत उपयोग के लिए वैश्विक सहयोग की मांग करता है।

लक्ष्य सं. 14 को प्राप्त करने के लिए सभी लोगों को पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए, जिसके लिए संस्थागत और कानूनी संरचनाओं के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय बलों की तैनाती आवश्यक है। हालांकि प्रगति हुई है मगर 2030 के लिए लक्ष्य अभी भी कोसों दूर है।

दुनिया के महासागर और समुद्र भोजन, ऊर्जा और खनिजों का एक प्रमुख स्रोत हैं, और कई उद्योगों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के लिए उनका तेजी से उपयोग किया जा रहा है। मत्स्य पालन और इन संसाधनों में व्यापार विशिष्ट उदाहरण हैं। कंटेनर जहाजों, तेल टैंकरों और जहाज बंदरगाहों सभी वैश्विक बाजार पर समुद्री उद्योग के प्रभाव में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। रोजगार की दृष्टि से समुद्र तटीय पर्यटन भी समुद्र संबंधी गतिविधियों से जुड़ा सबसे महत्वपूर्ण उद्योग है।

"ब्लू इकोनॉमी" शब्द ने हाल के वर्षों में लोकप्रियता हासिल की है और संयुक्त राष्ट्र (यू.एन.), यूरोपीय संघ (ई.यू.), आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओ.ई.सी.डी.) और विश्व बैंक द्वारा इसका इस्तेमाल किया गया है। वास्तव में, संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, एसडीजी 14 - "पानी के नीचे का जीवन" केवल ब्लू इकोनॉमी को लागू करके ही प्राप्त किया जा सकता है।

ब्लू इकोनॉमी (नीली अर्थव्यवस्था) क्या है?

"ब्लू इकोनॉमी" या नीली अर्थव्यवस्था शब्द हमारी अर्थव्यवस्था का विस्तार करने, आजीविका बढ़ाने और रोजगार प्रदान करने के लिए समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग को संदर्भित करता है। 2012 के एक शिखर सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र ने पहली बार "ब्लू इकोनॉमी" पर चर्चा की और स्थायी प्रबंधन की आवश्यकता पर यह तर्क देते हुए बल दिया कि स्वस्थ समुद्री पारितंत्र (मरीन इकोसिस्टम) अधिक उत्पादक हैं। यह वैज्ञानिक साक्ष्य द्वारा समर्थित है कि पृथ्वी के संसाधन सीमित हैं और ग्रीनहाउस गैसें दुनिया को नुकसान पहुंचा रही हैं।

पिछले कई वर्षों में समुद्रों, महासागरों और तटीय क्षेत्रों के उपयोग में बढ़ोतरी देखी गई है। ब्लू इकोनॉमी नए व उभरते क्षेत्रों के विकास पर भी ध्यान केंद्रित करती है जो 20 साल पहले लगभग अस्तित्वहीन थे, जैसे कि ब्लू कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन, समुद्री ऊर्जा और जैव प्रौद्योगिकी; ये क्षेत्रीय गतिविधियाँ न केवल प्रशिक्षण और रोजगार के लिए क्षमता व अवसर पैदा करती हैं बल्कि जलवायु परिवर्तन से भी लड़ती हैं। इन क्षेत्रों में मत्स्य पालन, तटीय पर्यटन और शिपिंग जैसे मौजूदा व्यवसाय शामिल हैं।

ब्लू इकोनॉमी का अर्थ एक "ब्लू इकोनॉमी बिजनेस मॉडल" बनाना है जो पर्यावरण से संबंधित कठिनाइयों का समाधान ढूंढकर हमारे समाज को बहुतायत में बदल देगा। ऐसे परिणाम उत्पन्न करने के लिए जो पर्यावरण और समाज दोनों के लिए फायदेमंद हों, ब्लू इकोनॉमी मॉडल वैज्ञानिक समाधानों एवं विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं का संयोजन करके संभावित लाभों पर जोर देता है।

ब्लू इकोनॉमी (नीली अर्थव्यवस्था) की आवश्यकता क्यों?

- ब्लू इकोनॉमी इसलिए आवश्यक है क्योंकि पृथ्वी का लगभग 97 प्रतिशत पानी समुद्र के रूप में है और पृथ्वी की सतह का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा महासागरों से ढका हुआ है।
- महासागर जैव विविधता की रक्षा करते हैं, पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करते हैं, और वैश्विक CO2 उत्सर्जन का लगभग 30% अवशोषित करते हैं। वैश्विक जी.डी.पी. का लगभग चार प्रतिशत महासागरों द्वारा उत्पन्न होता है।
- जल का स्थायी रूप से उपयोग करके ब्लू इकोनॉमी में आय और रोजगार सृजन के अवसर पैदा करने व आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की क्षमता है।
- यह नई ऊर्जा तकनीक, चिकित्सा के क्षेत्र में, प्रोटीन युक्त भोजन का माध्यम, गहरे समुद्र में खनिज और सुरक्षा स्रोतों के साथ-साथ खाद्य आपूर्ति के विविधीकरण के निर्माण को प्रोत्साहित कर सकता है।

ब्लू इकोनॉमी (नीली अर्थव्यवस्था) पर प्रभाव:

- समुद्री आतंकवाद, समुद्री डकैती, कच्चे तेल का अवैध व्यापार, बंदूकें, ड्रग्स और लोगों की तस्करी का नीली अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है।
- तूफान और सुनामी हर साल तबाही का कारण बनते हैं। हजारों लोग तूफ़ान में फ़स जाते है और करोड़ो रुपयों की संपत्ति का नुकसान होता है।
- जलवायु परिवर्तन और तेल रिसाव मानव निर्मित समस्याओं के दो ऐसे उदाहरण हैं जो समुद्री क्षेत्र की स्थिरता के लिए खतरा बने हुए हैं।
- पानी के तापमान और अम्लता में परिवर्तन के कारण जलवायु परिवर्तन का समुद्री प्रजातियों पर प्रभाव पड़ता है।
- समुद्र में कृषि, मल, रासायनिक और प्लास्टिक कचरे का प्रवाह समुद्री प्रदूषण के कुछ उदाहरण हैं।
- समुद्री संसाधनों का अवैध, गुप्त और असूचित निष्कर्षण भी एक गंभीर समस्या है।

भारत के लिए ब्लू इकोनॉमी कितनी महत्वपूर्ण है?

- नीली अर्थव्यवस्था की बदौलत भारत के पास राष्ट्रीय स्तर पर अपने सामाजिक एवं आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपने पड़ोसियों के साथ संबंध सुधारने की क्षमता प्राप्त हो सकती है।
- नीली अर्थव्यवस्था तटीय आबादी के स्वास्थ्य और रहने की स्थिति में सुधार करने और आजीविका के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता कर सकती है।
- भूख और गरीबी उन्मूलन और 2030 तक समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के प्रयासों को नीली अर्थव्यवस्था द्वारा मजबूत और समृद्ध किया जा सकता है।
- भारत की नीली अर्थव्यवस्था देश के 95% व्यापार को समर्थन करती है और सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में अनुमानित 4% का योगदान करती है। भारतीय तटरेखा नौ तटीय राज्यों, 12 प्रमुख बंदरगाहों और 200 छोटे बंदरगाहों में 7,500 किमी से अधिक फैली हुई है।
- विश्व का लगभग 80% तेल व्यापार हिंद महासागर से होकर गुजरता है, जो इसे एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक मार्ग बनाता है।

भारत में ब्लू इकोनॉमी का भविष्य:- विकास, रोजगार सृजन और पर्यावरण संरक्षण के व्यापक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए भारत को आर्थिक लाभों के साथ-साथ स्थिरता और संतुलन बनाये रखने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। मानवीय आपात स्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए एक कुशल प्रणाली विकसित की जानी चाहिए।

भारत को अपने समुद्रों को न केवल जलाशयों के रूप में बल्कि बड़े पैमाने पर चल रहे सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों के मंच के रूप में भी देखना चाहिए। नीली अर्थव्यवस्था अपने विविध समुद्री हितों के कारण भारत के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण संभावित स्थान रखती है। यदि स्थिरता और सामाजिक-आर्थिक कल्याण को प्राथमिकता दी जाती है, तो यह सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) और धन का अगला गुणक हो सकता है। विकास, रोजगार सृजन और पर्यावरण संरक्षण के व्यापक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए भारत को गांधीवादी दर्शन को अपनाना चाहिए और स्थिरता और आर्थिक लाभ के बीच संतुलन बनाना चाहिए।

आगे बढ़ने का रास्ता:

- जलीय प्राणिओं को पकड़ने की सीमा निर्धारित करना, समुद्री संरक्षित क्षेत्रों का निर्माण करना और संसाधन निष्कर्षण को रोकने के लिए नियम लागू करना।
- तटीय क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों के विकास और विस्तार के लिए बंदरगाहों, हवाई अड्डों और अन्य सेवाओं जैसे बुनियादी ढांचे में निवेश।
- समुद्री अनुसंधान और विकास के लिए एक ज्ञान केंद्र का विकास किया जा सकता है।
- अन्य देशों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और अन्य हितधारकों के साथ परियोजनाओं पर सहयोग करके नीली अर्थव्यवस्था के विस्तार और उन्नति का समर्थन किया जा सकता है।
- इसके अतिरिक्त भारत को अपने महासागरों को केवल जल निकायों के बजाय चल रही सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बातचीत के लिए एक विश्वव्यापी मंच के रूप में मानना चाहिए।

आचरण

श्री अरुण कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

अच्छा आचरण हमारे दैनिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। जीवन में इनका महत्व सर्वविदित है। अच्छा तरीका दोस्तों के साथ एक प्रभावी बातचीत बनाता है और साथ ही एक सार्वजनिक मंच पर अच्छी छाप छोड़ता है। यह हमें दिन भर सकारात्मक रहने में मदद करता है। अच्छा आचरण किसी व्यक्ति को विशिष्ट परिस्थितियों में व्यवहार, प्रतिक्रिया या कार्य करने का तरीका सिखाते हैं। आचरण के कुछ नियम हैं जिनका पालन हम सभी को करना चाहिए। जैसे – कार्यालय आचरण ।

आपका आचरण कार्यालय में एक बेहतर वातावरण बनाये रखने हेतु मदद कर सकता है । यहां तक कि यह आपकी कार्य कुशलता को बढ़ाने में भी आपकी मदद करता है।

- आवश्यकता से इतर, जैसे फोन पर बात करना और सहकर्मियों के साथ बात करना, एक कार्यालय में शोर कम रखना चाहिए।
- सहकर्मियों से ईमेल, वॉयस मैसेज, टेक्स्ट और अन्य प्रकार के पत्राचार प्राप्त करने पर उन्हें प्रतीक्षा कराते रहने के बजाय समय पर उत्तर देना चाहिए।
- एक खुले कार्यालय के माहौल में काम करते समय सम्मान, मिलनसार व्यवहार प्रभावी कार्यालय संस्कृति का मूल है। सहकर्मियों के साथ उसी तरह का व्यवहार करें, जिसकी हम स्वयं अपेक्षा करते हैं।
- सभी से विनम्रता पूर्वक बात करनी चाहिए। बहुत बार हो सकता है कि आपको किसी की बात अच्छी न लगी हो तो उस समय धैर्य से काम लें, बाद में बेहद शालीनता से अपनी बात रखें।
- सहकर्मियों के लिए सुखद और मैत्रीपूर्ण होना एक कार्यालय संस्कृति को सफल बनाता है और जो इस प्रकार काम करने के लिए वांछनीय है। इस प्रकार कर्मचारियों को ऊर्जावान बनाए रखने और आकर्षित करने में मदद मिलेगी।
- अपने साथी कर्मचारियों के साथ अपने स्वयं के हितों और शौक को साझा करते हुए मित्रवत व्यवहार करना चाहिए।
- यदि आपने एक सफल परियोजना या कार्य पर सह-काम किया है, तो सहयोगियों और टीमों के बीच क्रेडिट साझा करना चाहिए।
- हम सभी अपनी नौकरी में अपने नए दिये गए दायित्वों से पहले कुछ दिन घबराते हैं परंतु सबके सहयोग से यह कार्य रुचिकर एवं अनुभव प्रदान करने वाला हो सकता है।

सारांश:-

अच्छे आचरण समाज में प्रत्येक के लिए महत्वपूर्ण हैं।अच्छे आचरण हमेशा लोगों के साथ एक नई बातचीत का

अवसर देते हैं अगर कोई आपसे बुरी तरह से बात करता है, तो भी आप उससे उस तरह से बात न करें। उसे बदलने का मौका देने के लिए हमेशा सकारात्मक तरीके से उससे बात करें। आचरण व्यक्ति का आंतरिक गुण होता है, जिसके माध्यम से सभी के मन में एक अच्छी छवि का निर्माण किया जा सकता है। भौतिक सुंदरता तो क्षणभंगुर होती है, परंतु आपकी व्यवहारिक सुंदरता आजीवन साथ निभाती है।

यदि हमारे व्यवहार और वाणी में शिष्टता न हो तो हमें स्वयं को सभ्य मनुष्य क्यों समझना चाहिए ?
प्राचीन कवि भर्तृहरी ने कहा है :

|| केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हाराः न चंद्रोज्ज्वलाः
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृताः मूर्द्धजाः
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्. ||

अर्थात् शिष्ट+आचार= शिष्टाचार- अर्थात विनम्रतापूर्ण एवं शालीनता पूर्ण आचरण शिष्टाचार ही वह आभूषण है जो मनुष्य को आदर व सम्मान दिलाता है, शिष्टाचार ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना
देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।
- महात्मा गांधी

जीवन और 'संगीत'

श्री विवेक मिश्रा,
वरिष्ठ लेखाकार,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

वर्ष 2020 में एक महामारी 'कोरोना वायरस' जब अपने रौद्र रूप में घर-घर में घुस रहा था और लोगों को असहज कर रहा था, तब एक और चीज था, जो तरंगों के माध्यम से घर- घर पहुंच कर लोगों को सुकून के कुछ पल उपलब्ध करा रहा था, वह था संगीत ।

ऐसा नहीं है कि उस दौरान संगीत लोगों तक पहली बार पहुंच रहा था, लेकिन उस समय घरों में कैद लोगों को संगीत ने मानसिक सुकून और भावनात्मक सहारा प्रदान किया जो किसी और साधन से मिलना शायद नामुमकिन था। वैसे तो संगीत का विस्तार सम्पूर्ण विश्व में हुआ है, लेकिन हमारे देश में संगीत का विस्तार अत्यधित तेज गति से हुआ है। इसकी एक वजह यह है कि हमारे जीवन में संगीत का बहुत महत्व रहा है। हम अपने जीवन में आये हर सुख-दुख को संगीत के माध्यम से ही जाहिर करते आए हैं। चाहे वह लोक संगीत हो या फिर शास्त्रीय संगीत, ये दोनों ही हमारी जीवन शैली के अभिन्न अंग रहे हैं।

अब तक हुए कई शोध बताते हैं कि अपना मनपसंद संगीत सुनते हुए लोग अधिक और अच्छा काम करते हैं। गीत संगीत से कई बीमारियों एवं मानसिक विकारों को दूर किया गया है। हमारे दिमाग की 'वेफॉम्स' को सामान्य करने में संगीत बहुत अधिक मददगार है ।

खुशी से लेकर उदासी तक में संगीत ही बड़ा सहारा रहा है। आलम यह है कि प्री और पोस्ट वेडिंग बिना संगीत के पूरी ही नहीं हो सकती हैं। लोग रोजमर्रा के काम जैसे मेडिटेशन, योग, व्यायाम, जॉगिंग, वॉकिंग, साइक्लिंग के वक्त भी अपना मनपसंद संगीत सुनते नजर आते हैं। अवसाद, मूड स्विंग, मिर्गी, डिमेंशिया, मनोविकार, नशा इत्यादि के चिकित्सा उपचार में भी संगीत थेरैपी काफी हद तक कारगर साबित हो रही है।

एक ज़माना था जब संगीत सुनने का एकमात्र साधन रेडियो हुआ करता था। इसके बाद टी.वी. आया और संगीत सुनने के साथ-साथ देखने की भी चीज बन गया। वह भी एक समय था जब चित्रहार देखने के लिए हमें उत्सुकता रहती थी और इंतजार करना पड़ता था। इसके बाद समय आया टेप रिकॉर्डर का, जिसमें अपनी पसंद का संगीत सुनने के लिए हमें कैसेट खोजनी पड़ती थी। लेकिन जब से सैटेलाइट चैनलों का दौर आया, तब से संगीत की पहुंच बहुत तेजी से बढ़ी। आज का दौर तो डिजिटल दौर हो गया है जब हम यूट्यूब पर अपनी पसंद का गाना या संगीत सर्च कर, सुन सकते हैं। कुछ सोशल मीडिया जैसे टिकटॉक, वाइटडांस, स्नैपचैट आदि ने तो संगीत प्रेमियों को प्लेटफॉर्म उपलब्ध करा दिया है। शुरू में तो इस प्लेटफ़ॉर्म पर शौकिया लोग ही संगीत पोस्ट करते थे, लेकिन अब पेशेवर संगीत कंपनियां भी अपने संगीत को इसी प्लेटफॉर्म पर रिलीज करना पसंद कर रही हैं। कलाकार भी यहां आकर परफॉर्म करना जरूरी समझते हैं। सारेगामा, गाना, हंगामा, विंक, स्पॉटिफाई, टिप्स, यूनिवर्सल म्यूजिक इंडिया आदि कंपनियां हर तरह का संगीत हम तक पहुंचाने में पूर्णतया तत्पर हैं।

आज नगरों एवं महानगरों में एफएम रेडियो ने भी संगीत के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जो एक संगीत क्रांति का रूप है। 20वीं शताब्दी के मोबाइल और डेटा क्रांति ने तो हर मुट्ठी और हर घर में संगीत को पहुंचाने में मदद की है। घर में हम अपने नित्य कामों को करने के साथ-साथ यूट्यूब आदि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपनी पसंद के गाने लगा कर सुनते हुए उन कामों को सहजता पूर्वक कर सकते हैं । इससे हमें काम करने का एहसास या उससे होने वाली थकावट पता नहीं चलती है, क्योंकि गाने सुनते हुए आपका मन प्रसन्न रहता है। यानी अब संगीत सिर्फ सुनने की चीज नहीं रह गया है, अपितु यह हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है।

आप सभी को 'विश्व संगीत दिवस - 21 जून' की हार्दिक बधाइयां।

हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है।
- राहुल सांकृत्यायन

भारत की नई संसद: लोकतांत्रिक प्रगति और राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक

श्रीमती मोनिका चौहान,
कनिष्ठ अनुवादक,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

भारत, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र, अपने जीवंत राजनीतिक परिदृश्य और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति अपनी पहचान रखता है। इस लोकतांत्रिक आदर्श के मध्य में भारतीय संसद का महत्वपूर्ण स्थान है, जो लोकतंत्र की मूलभूतता को प्रतिष्ठानित करता है और राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक ऐतिहासिक संस्थान है जहां लोकसभा और राज्यसभा, जिनका संयोजन संसद भवन में होता है, मिलकर देश के निर्माण और प्रगति के लिए काम करते हैं।

विश्वयुद्ध के बाद एवं भारत की आजादी के पश्चात एक नया युग आरंभ हुआ। लोकतांत्रिक संविधान के साथ, जो 26 जनवरी 1950 को प्रभावी हुआ, एक नई पहल शुरू हुई। भारत एक लोकतांत्रिक देश है। इसके बावजूद स्वतंत्रता के 75 वर्षों के बाद, देश ने आधिकारिक रूप से अपनी संसद को आधुनिक और भव्य बनाने की घोषणा की है। इस नए संसद भवन का उद्घाटन, जो भविष्य में एक ऐतिहासिक अध्याय के रूप में दर्ज होगा, न केवल भारत की तरक्की का एक प्रतीक है, बल्कि यह एक नए भारत के संकल्प की प्रतिष्ठा है।

भारतीय संसद स्वतंत्रता के बाद से देश की राजनीति और नीति निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। नया संसद भवन, जो दिल्ली के केंद्रीय शासन क्षेत्र में स्थित है, देश की संप्रभुता, प्रगति, और लोकतांत्रिकता के प्रतीक के रूप में उभरता है। यह इतिहास, कला, और तकनीक के मधुर मेल का प्रतीक है और दुनिया के अन्य संसद भवनों की तुलना में एक मार्क ऑफ इंटरनेशनल एकीकरण को भी प्रकट करता है।

भारत के नए संसद भवन का निर्माण वर्ष 2019 में शुरू हुआ था जो कि अब पूर्ण हो गया है। इसमें अद्यतनित आर्किटेक्चर, आधुनिक तकनीक, और विश्वस्तरीय ढांचा शामिल है। नए संसद भवन का निर्माण पर्यावरणीय सुरक्षा, और सामरिक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य एक अद्यतित और विश्वस्तरीय मंच प्रदान करना है, जिसके माध्यम से सदस्यों को अधिक आराम और सुविधाएं मिलेंगी, जिससे वे अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकेंगे।

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 28 मई 2023 को भारत के नए संसद भवन का उद्घाटन किया । प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 10 दिसम्बर 2020 को इसकी आधारशिला रखी थी । नया संसद भवन, आर्किटेक्ट्स और इंजीनियरों के एक मजबूत समूह द्वारा डिज़ाइन किया गया है। इसे आधुनिकता, विशेषता, और आदर्शता के तीन स्तंभों पर आधारित माना जाता है। प्रथम स्तंभ, "अद्यतनित और आधुनिकता", भवन की आधुनिकता और नवीनता को प्रदर्शित करता है। इसमें उच्चतम गुणवत्ता के साथ पूर्णता की अवधारणा है। द्वितीय स्तंभ, "विशेषता", भवन की विशेषता और आदर्शता की ओर संकेत करता है। यह भारतीय कला, संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत की प्रशंसा करता है। तृतीय स्तंभ, "आदर्शता" संसद के महत्व को प्रतिष्ठित करता है और इसे एक राष्ट्रीय आदर्श के रूप में स्वीकार करता है।

नए संसद भवन का आवासीय क्षेत्र 64 एकड़ है और इसकी कुल आवासीय क्षमता 888 सदस्यों के लिए है। यह संगठनिक रूप से व्यवस्थित है, जिसमें विभिन्न सदनों, समितियों, और कार्यालयों का विन्यास है। यह एक उच्चतम गुणवत्ता के साथ व्यापक सदस्यों को सुविधाएं प्रदान करने के लिए विशेषता और आराम की सुविधाओं से भरा हुआ है। सदस्यों के लिए सुविधाएं, जैसे विपणन कक्ष, गुरुकुल, पुस्तकालय, जलपान-गृह, और स्वास्थ्य केंद्र संगठनित रूप से व्यवस्थित हैं।

नए संसद का मुख्यालय भवन, "नेक्स्ट जेनेरेशन" और "इंडिया गेट" के बीच स्थित है। यह भवन आवासीय और सार्वजनिक क्षेत्रों को जोड़ने वाले सुंदर आँगन की तरह हैं।

देश का नया संसद भवन वास्तुकला और आधुनिक सुविधाओं के लिहाज से अनुपम संरचना है। संसद भवन को त्रिकोण आकार में बनाया गया है । इस इमारत में सम्पूर्ण भारत की झलक देखी जा सकती है । इसमें उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर की कालीन, त्रिपुरा के बांस से बने फर्श और राजस्थान के नक्काशीदार पत्थरों का प्रयोग किया गया है । यह नई इमारत भारत की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती है।

भारत के नए संसद भवन में अनेक खूबियां है । इसका निर्माण सेंट्रल विस्टा परियोजना के तहत किया गया है । इसका निर्माण आने वाले 150 वर्षों की जरूरतों को ध्यान में रख कर किया गया है । पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ यह भूकंपरोधी भी है । इसके निर्माण में वास्तुशास्त्र के नियमों का भी ध्यान रखा गया है।

देश को मिला नया संसद भवन अपने आप में कई लिहाज से खास है । नए संसद भवन की विशेषताओं को लेकर लोगों में खासा कौतूहल भी है । इस इमारत में मौजूद सुविधाओं के अलावा इमारत की लागत, उसमें इस्तेमाल की गई सामग्री, उसकी बनावट और यहां तक कि उसके वास्तु के पहलुओं के बारे में सभी को पता होना चाहिए । तो आइए जानते हैं कि देश के नए संसद भवन की इमारत कैसी है और इसकी क्या क्या बातें इसे खास बना रही हैं ।

संसद भवन किन इमारतों से घिरा है :-

इस इमारत की सबसे खास बात इसकी डिजाइन है । सेंट्रल विस्टा रिडेवलपमेंट प्रोजेक्ट के तहत निर्मित इस इमारत को वास्तुविद बिमल पटेल ने डिजाइन किया है । देश के वर्तमान राष्ट्रपति भवन से 750 मीटर की दूरी पर यह भवन संसद मार्ग पर स्थित है और यह विजय चौक, इंडिया गेट एवं नेशनल वार मेमोरियल सहित अन्य इमारतों से घिरा है ।

विशाल लोकसभा :-

इस इमारत का विशाल क्षेत्रफल कुल 64500 वर्ग मीटर है। इसमें लोकसभा के लिए 888 सीटें हैं जबकि राज्यसभा की 384 सीटें हैं। अभी वर्तमान लोकसभा की 543 सीटें और राज्यसभा की केवल 250 सीटें ही हैं, फिर भी लोकसभा के कक्ष में सीटों की संख्या 1272 तक बढ़ाने का विकल्प है। लोकसभा कक्ष में संसद का संयुक्त अधिवेशन भी चलाया जा सकेगा यानि वर्तमान संसद भवन की तरह इसमें सेंट्रल हॉल नहीं है।

वास्तु के नियमों का भी ध्यान :- संसद भवन का सबसे बड़ा आकर्षण है इसका त्रिकोणीय आकार है। इस आकार की वजह इसका प्लॉट है। यह आकार विभिन्न धर्मों के लिहाज से पवित्र ज्यामिति के अनुकूल है। इसके साथ ही इसमें भारतीय संस्कृति के वास्तुशास्त्र के नियमों का भी ध्यान रखा गया । प्रवेश द्वार, कमरों के आकार और यहां तक कि तमाम जानवरों की मूर्तियों को लगाते समय भी इसका ध्यान रखा गया है।

प्रवेश द्वारों के रक्षक :- इमारत में तीन तरफ से प्रवेश द्वार हैं जहां से अवसरों के अनुसार राष्ट्रपति, सभापति, प्रधानमंत्री जैसे गणमान्य व्यक्ति विशेष तौर पर आवा-गमन कर सकेंगें । वहीं जन-सामान्य और संसद भवन की सैर करने वाले दर्शकों के लिए प्रवेश पार्लियामेंट स्ट्रीट के जरिए दिया जाएगा, जो प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के पास होगा। सभी प्रवेश द्वारों पर कई जानवरों की मूर्तियां रक्षकों की तरह लगाई गई है जिसमें हाथी, घोड़े, चील, हंस, मगरमच्छ आदि शामिल हैं जो एक अलग तरह का आकर्षण पैदा करते हैं।

पर्यावरण के कितने अनुकूल :- नए भवन की डिजाइन में इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि वह पर्यावरण के अनुकूल हो। इसके निर्माण में ग्रीन तकनीकों का प्रयोग किया गया है। पुरानी संसद से बड़ी होने के बावजूद भी इसमें बिजली की खपत में करीब 30 फीसद की कमी आ जाएगी। इसके साथ ही इसमें रेनवाटर हार्वेस्टिंग और वाटर रीसाइक्लिंग जैसे सिस्टम लगाए गए हैं और इसे अगले 150 साल की जरूरतों के हिसाब से डिजाइन किया गया है।

भूकंपरोधी क्षमता :- संसद भवन को बनाते समय इस बात का खास ध्यान रखा गया है कि यह इमारत भूकंप से खराब ना हो । बिल्डिंग कोड के मुताबिक दिल्ली का इलाका सीज्मिक ज़ोन 5 के दायरे में आता है इसलिए इसे भूकंपरोधी बनाने का खास ख्याल रखा गया है। वर्तमान संसद भवन के बारे में यह दलील दी जाती रही है कि वह भूकंप के झटकों को झेलने में पर्याप्त रूप से मजबूत नहीं है।

लोकसभा और राज्यसभा की थीम :- नए संसद भवन के अंदर की खूबसूरती भी कम नहीं है। लोकसभा का कक्ष मोर की थीम पर आधारित है, जिसकी दीवारों और छत पर मोर के पंखों की डिजाइन है। वहीं राज्यसभा का कक्ष कमल की थीम पर बनाया गया है, जिसमे लाल रंग की कालीन का उपयोग किया गया है। दोनों सदनों में एक बेंच पर दो सांसद बैठ सकेंगे और उनकी डेस्क पर टच स्क्रीन होगी। लोकसभा और राज्यसभा कक्षों में 'फॉल्स सीलिंग' के लिए स्टील की संरचना केंद्र शासित प्रदेश दमन और दीव से मंगाई गई है, जबकि फर्नीचर मुंबई में तैयार किया गया है। इमारत पर लगे पत्थर की 'जाली' राजस्थान के राजनगर और उत्तर प्रदेश के नोएडा से मंगवाई गई है।

भारत की सच्ची भावना को दर्शाती है नई संसद:- संसद भवन के निर्माण के लिए पूरा देश एक साथ आया । यह 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की सच्ची भावना को दर्शाता है। संसद भवन के निर्माण में भारत के विभिन्न राज्यों से मंगवायी गई सामग्रियों का प्रयोग किया गया है, जैसै- धौलपुर का बलुआपत्थर, जैसलमैर राजस्थान का ग्रेनाइट, नागपुर की खास लकड़ी का उपयोग कर मुंबई के काष्ठकारों ने उसे आकृतियों का आकार दिया है। नए भवन में इस्तेमाल की गई सागौन की लकड़ी महाराष्ट्र के नागपुर से लाई गई थी, जबकि लाल और सफेद बलुआ पत्थर राजस्थान के सरमथुरा से लाया गया। खास बात यह है कि लाल किले और हुमायूं के मकबरे के लिए बलुआ पत्थर भी सरमथुरा से ही लाया गया है। केसरिया हरा पत्थर उदयपुर से, अजमेर के पास लाखा से लाल ग्रेनाइट और सफेद संगमरमर अंबाजी राजस्थान से मंगवाया गया है। संसद में लगे अशोक चिह्न के लिए सामग्री महाराष्ट्र के औरंगाबाद और राजस्थान के जयपुर से लाई गई है, जबकि इसके बाहरी हिस्सों में लगी सामग्री को मध्य प्रदेश के इंदौर से खरीदा गया है। पत्थर की नक्काशी का काम आबू रोड और उदयपुर के मूर्तिकारों ने किया है। पत्थरों को कोटपूतली, राजस्थान से लाया गया है। नए संसद भवन में निर्माण गतिविधियों के लिए ठोस मिश्रण बनाने के लिए हरियाणा में चरखी दादरी से निर्मित रेत या 'एम-रेत' का इस्तेमाल किया गया है।

संसद भवन की दीवारें :- संसद भवन की दीवार पर लगी एक तस्वीर आजादी और विभाजन के पहले का नक्शा है। अखंड भारत के इस नक्शे में प्राचीन समय के महत्वपूर्ण साम्राज्यों और शहरों को दिखाया गया है। साथ ही वर्तमान पाकिस्तान में स्थित तक्षशिला को भी दर्शाया गया है। नक्शे के पास स्थित एक पत्थर में पुराने शिलालेख से एक लेख लिखा गया है। दूसरी ओर प्राचीन काल की मूर्तियां स्थापित हैं।

संसद भवन की दीवारों पर ये भी आए नजर:- संसद भवन की दीवारों पर भारत के पूर्व गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल, अंबेडकर, चाणक्य के चित्र भी आकर्षण का केंद्र हैं। इसके अलावा संसद भवन की दीवारों पर देश की सांस्कृतिक विविधता के भित्ति चित्रों सहित कलाकृतियां भी बनाईं गईं हैं।

इस प्रकार, भारत की नयी संसद भवन देश के लिए गर्व का विषय है और इसका महत्व और भूमिका यहां के लोगों और देशवासियों को स्पष्ट हो रही है। यह संसद भवन न केवल एक सरकारी भवन है, बल्कि यह एक राष्ट्रीय स्मारक है जो देश की आधारभूत संरचना को प्रतिष्ठित करता है और भारतीय लोकतंत्र के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को दर्शाता है साथ ही उनकी कर्तव्यपरायणता और सच्ची सेवा के महत्व को प्रतिष्ठानित करता है।

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।

-आचार्य विनोबा भावे

आदिकाल से हिंदी की विकास यात्रा

श्री अमरेन्द्र कुमार चौरसिया,
डी.ई.ओ.
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

हिंदी भाषा के विकास की यात्रा को विद्वान संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के रूप में देखते हैं । विशेषज्ञों के अनुसार, ग्यारहवी शताब्दी के प्रारम्भ में हिंदी भाषा की विकास यात्रा का आरंभ होता है । विद्वानों के अनुसार हिंदी का जन्म लगभग 700 ई. माना गया है । इस अनुसार अब तक हिदी लगभग 1300 वर्षों की हो गई है । उसके 1300 वर्षों के इतिहास और विकास को तीन भागों में बाँटा गया है : आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल ।

आदिकाल (1000 ई. से 1500 ई.) –

आदिकाल की हिंदी अपभ्रंश की भांति थी क्योंकि हिंदी का उद्भव अपभ्रंश से ही हुआ है । अपभ्रंश की हिंदी में केवल आठ स्वर थे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ । ये आठों ही स्वर मूल थे । आदिकाल की हिंदी में दो नए स्वर ऐ और औ विकसित हुए, जो संयुक्त स्वर थे । इनका उच्चारण क्रमशः अए और अओ जैसा था ।

आदिकाल हिंदी का व्याकरण भी अपभ्रंश के बहुत निकट था । भाषा के काफी रूप ऐसे थे जो अपभ्रंश के थे, किंतु धीरे-धीरे अपभ्रंश के व्याकरणिक रूप कम होते गए और हिंदी के अपने रूप विकसित हो गए । 1500 ई. आते – आते हिंदी अपने पैरों पर खड़ी हो गई और अपभ्रंश के रूप प्रायः प्रयोग से निकल गए ।

मध्यकाल (1500 ई. से 1800 ई. तक) –

इस काल में आकर हिंदी की ध्वनि, व्याकरण तथा शब्द भंडार के क्षेत्र में कई परिवर्तन हो गए । दरबारों में फारसी भाषा का प्रयोग होने के कारण उच्च वर्ग और नौकरी पेशा लोगों में फारसी का प्रचार हुआ, जिसके कारण उच्च वर्ग के लोगों की हिंदी में तुर्की-अरबी-फारसी के काफी शब्द प्रचलित हो गए और क़, ख़, ग़, ज़ एवं फ़ ये पाँच नए व्यंजन हिंदी में आ गए ।

इस काल में हिंदी भाषा व्याकरण के क्षेत्र में पूरी तरह अपने पैरों पर खड़ी हो गई । अपभ्रंश के रूप हिंदी से लगभग खत्म हो गए और जो कुछ बचे थे, उन्हे हिंदी ने आत्मसात् कर लिया था । आदिकालीन की तुलना में परसर्गों और सहायक क्रियाओं का प्रयोग बढ़ गया । इस काल में आते-आते काफी शब्द फारसी, अरबी तथा पश्तो से हिंदी में आ गए और इन आगत विदेशी शब्दों की संख्या लगभग 5000 से भी अधिक हो गई । फारसी के कुछ मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी हिंदी में शामिल हो गईं । इस काल में भक्ति आंदोलन चरम पर होने के कारण तत्सम शब्दों का अनुपात भाषा में और भी बढ़ गया । यूरोप के संपर्क में आने के कारण पुर्तगाली, स्पेनी, फ्रांसीसी और अंग्रेजी के शब्द भी हिंदी में आ गए ।

आधुनिककाल (1800 ई. से अब तक) –

इस काल में मुख्यतः 1940 के बाद ऐ और औ जिनका उच्चारण अए और अओ था की स्थिति कुछ भिन्न हो गई । पश्चिमी हिंदी क्षेत्र में ये स्वर सामान्यतः मूल स्वर के रूप में उच्चरित होने लगे जबकि पूर्वी हिंदी में उनका स्वरूप

वही था । मध्य काल में हिंदी वाक्य रचना एक सीमा तक फारसी से प्रभावित हुई थी, आधुनिक काल में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार, फारसी की तुलना में कहीं अधिक हुआ। समाचार-पत्रों, रेडियो तथा सरकारी कामों में प्रयोग के कारण भी अंग्रेजी का प्रचलन बढ़ गया। इस काल में अनेक पुराने शब्द नए अर्थों में प्रचलित हो गए थे। आधुनिक काल राजनीति का काल है। अतः भारतीय राजनीति केंद्र दिल्ली की भाषा खड़ी बोली, ब्रज, अवधी आदि को पीछे छोड़ प्रायः हिंदी क्षेत्र की साहित्यिक अभिव्यक्ति का एकमात्र माध्यम बन गई थी और यही खड़ी बोली हिंदी हमारी राजभाषा भी बन गई ।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गर्व का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

-डॉ. राजेंद्र प्रसाद

बुद्धवानी – 'चित्तवर्ग'

श्री के.एन.मौर्य,
मूल संकाय / ज्ञान केंद्र,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

समूची बुद्धवानी को त्रिपिटक के नाम से जाना जाता है। इसके तीन बड़े विभाजन है - 1) विनयपिटक 2) सुत्तपिटक एवं 3) अभिधम्मपिटक। इसमें से सुत्तपिटक के अंतर्गत पांच निकाय हैं - दीघनिकाय, मंझिमनिकाय, संयुक्तनिकाय, अंगुत्तरनिकाय तथा खुद्दकनिकाय। 'खुद्दकनिकाय' में कुल 19 ग्रन्थ हैं। इन 19 ग्रंथो में से ही एक है . 'धम्मपद'।

धम्मपद में कुल 26 वर्ग तथा 423 गाथाएँ हैं । इन्ही 26 वर्गो में से क्रमांक 3 पर है "चित्तवर्ग", जो निम्नानुसार गाथा संख्या 33 से 43 तक है-

33-फन्दनं चपलं चित्तं, दूरक्खं दुन्निवारयं
उजुं करोति मेधावी, उसुकारो व तेजनं।

भावार्थ:- तथागत जब चालिका नामक पर्वत पर विहार कर रहे थे। आयुष्मान मेघिय भगवान् के सेवक के रूप में बैठे थे। एक दिन मेघिय स्थविर ने भगवान् से आम के बगीचों में विहार करने के लिए जाने की अनुमति माँगी तो बुद्ध ने जाने से इंकार किया। मना करने के बावजूद वे गये लेकिन वहाँ जाकर ध्यान नहीं कर सके। शाम को वापस लौटकर बुद्ध से सब कुछ कह दिया। तब बुद्ध ने उक्त गाथा को सुनाते हुए कहा कि "भिक्षु को इच्छाचारी नहीं होना चाहिए, यह चित्त क्षणिक है, इसे अपने वश में रखना चाहिए"।

चित्त, मन, विज्ञान आदि पर्याय हैं, चित्त अरूपी है, विज्ञान ऊर्जा सदृश है जिसका न रूप है, न वजन, न संस्थान। लेकिन ऊर्जा एक ऐसा तत्त्व है, जिससे विभिन्न रूप प्रकट होते हैं। दूसरी ओर आकाश, जिसका न रूप है, न संस्थान है, न भार है, न अंग-प्रत्यंग, लेकिन फिर भी आकाश है। आकाश के बिना न हम खड़े हो सकते हैं, न हम किसी का निर्माण कर सकते हैं। आकाश ही वही वस्तु-धर्म है, जो हमें निर्माण करने के लिए अवसर देता है। उदाहरण के लिए खुला आकाश न होता, तो पेड़-पौधे कैसे होते? मकान कैसे खड़े होते? यह वही आकाश है, जिसने हमें स्थान दिया, जिससे मकान निर्माण कर सके, पेड़-पौधे उगा सके। जिस स्थान पर बहुत बड़ा पत्थर पड़ा हो, वहाँ पेड़ नहीं उगा सकते हैं क्योंकि वहाँ आकाश को पत्थर ने घेर लिया है। अतः आकाश के अभाव में वहाँ पेड़ उग न सकेगा, उसी प्रकार जब हम मन, चित्त आदि की बातें करते हैं, तो न उसका रूप है, न संस्थान है और न ही वजन आदि, क्योंकि वह अरूपी है, उसके होने को हम केवल अनुभव से जान सकते हैं। दुःख होता है, खुशियाँ होती हैं, अनन्त वेदनायें होती है। यह उसी मन, चित्त का गुण है, जिसके अस्तित्व से ये वेदनायें उत्पन्न हो रही हैं।

यह सुख, दुःख एवं राग-द्वेष आदि विकार और करूणा, मैत्री आदि गुण भी चित्त का ही गुण है, जिसे हम चैतसिक भी कहते हैं, जिसे ग्रन्थों में चित्त को सागर और चैतसिकों को उसकी लहर से उपमा दी गयी है। लहर न सागर से भिन्न है, न सागर के साथ बिल्कुल एक है, क्योंकि सागर तो वहाँ सदा है, लेकिन लहर कभी आती है, कभी नहीं; कभी कम तो कभी ज्यादा; उसी प्रकार चित्तवृत्तियों के साथ भी ऐसा ही हमें देखने को मिलता है, या अनुभव

होता है। जैसे सागर वायु से चलायमान चंचल रहता है, उसी प्रकार हम लोगों का मन कार्मिक वायु से चंचल है, चपल है। यह कभी चित्त को अपने रूप में स्थिर होने नहीं देती। कभी यह कार्मिक वायु चित्त को भूतकाल की ओर खींचती है, तो कभी भविष्य की ओर ले जाती है और न ही कभी वर्तमान में ठहरने देती है। लेकिन जैसे सागर का गर्भ स्थिर है, उसी प्रकार चित्त का मूल, गर्भ शान्त है। उस तक पहुँचना, उसकी प्राप्ति ही निर्वाण की अवस्था है। उसका ऊपरी तल अर्थात् लहर संसार है। इसीलिए तो सिद्धों ने कहा है कि इस रत्नरूपी चित्त के अतिरिक्त न संसार है और न निर्वाण है। यदि आप चित्त विकारों को 'चित्त का ही अवस्था विशेष है, ऐसा समझ जायेंगे तो चित्त की वृत्तियाँ आपको परेशान नहीं कर सकेंगी, चित्त क्षणिक होने से वे पैदा होकर उसी में लीन हो जायेंगी।

लेकिन चित्त चंचल है, चपल है, उसमें (व्यक्ति को) स्थित होने नहीं देता। उसे भय है, उसका अस्तित्व ही नष्ट हो जायेगा, उसे तो चपल होना ही है। इसी कारण समस्या तब खड़ी होती है, जब हम किसी घटना के घटने पर उसे पत्थर पर खोदे अक्षर-सदृश पकड़े रहते हैं, लकड़ी पर खुदे आकार-सदृश पकड़े रहते हैं, जबकि वह तो उसी क्षण परम-शांत अवस्था में लीन हो गया था। उसे न समझने से यह हुआ है, अन्यथा यह सब तो पानी पर डण्डा मारने के समान है। डण्डा क्या मारा, उसी समय पानी आपस में मिल गया, पानी में आपने अक्षर क्या लिखा, तुरन्त एक हो गया, रहता ही कहाँ है। उसी प्रकार सभी घटनायें उत्पन्न-क्षय इसी क्रम में उसी में विलीन हो रही हैं। वहाँ फँसे रहने के लिए कांटा है ही कहाँ? यदि व्यक्ति ने इसे समझ लिया कि सुख-दुःख सभी पानी पर लिखे जाने वाले अक्षर-सदृश है, तो उसने निर्वाण- पद को प्राप्त कर लिया। बुद्धिमान् व्यक्ति चित्त की इस चंचलता, कुटिलता को जानकर जैसे बाण बनाने वाला बाण को सीधा करता है, उसी प्रकार ज्ञानी मन की थाह लेने की, गर्भ में पहुँचने की चेष्टा करता है, स्थित चित्त होने का प्रयास करता है।

34-वारिजोव थले खित्तो, ओक मोक तउब्भतो
परिफन्दतिदं चित्तं, मारधेय्यं पहातवे।

भावार्थः- जब व्यक्ति राग, द्वेष, क्रोध, ईर्ष्या आदि के वश में आ जाता है, वह परेशान हो जाता है। न खा सकता है, न पी सकता है, न सो सकता है, न किसी से बात कर सकता है और न ही एक जगह रह सकता है। तड़फड़ाता है, अपने तक को नष्ट कर देता है। उसकी स्थिति वैसी ही हो जाती है, जैसी मछली की पानी से निकाल कर गर्म रेत पर फेंकने से होती है। यद्यपि देखा जाय तो राग, द्वेष, क्रोध आदि का कोई मूर्तरूप नहीं है; न हाथ है, न पैर, न सिर है, न ही रूप है और न संस्थान। वे कहाँ से आते हैं और कैसे आकर व्यक्ति को परेशान कर देते हैं, आश्चर्यजनक है? निश्चित रूप से यदि हम क्लेशरूपी मार के स्रोत को देखने की चेष्टा करते, तो उसे स्रोत रहित देखकर शान्त होते, लेकिन हम कभी भी यह प्रयास नहीं करते कि उसके उत्स तक जायें। मात्र उसकी लीला या बाहरी रूप तक जाते हैं। इसीलिए परेशानियाँ होती हैं। राग आदि मार बाहर कहाँ है, वह तो आपके अन्दर ही बैठा है।

उदाहरण के लिए कभी हमसे बस या रेलगाड़ी छूट जाती है। हम परेशान हो जाते हैं। परेशानी बस या रेलगाड़ी में थोड़े ही न थी, वह तो आपमें थी। बस स्टैंड तक पहुँचने से पहले आप शान्त थे, अब परेशान हो चले। अब परेशानी क्यों? आपकी परेशानी से बस वापस आने वाली नहीं है। अच्छा तो यह होता कि उसे उसी स्थिति में स्वीकारते। बस छूटी नुकसान एक हुआ, परेशान हुए, नुकसान दूसरा हुआ, उससे फिर अन्यों को परेशान करके तीसरी परेशानी आप खड़ी करेंगे। यदि आप परेशानी के स्रोत तक जायेंगे अर्थात् उसका कारण जान जायेंगे तो उसे जानकर आप शान्त हो जायेंगे। ऐसा हो सकता है कि 10 आदमी एक ही बस के छूटने पर 10 प्रकार की प्रतिक्रियायें करें। सम्भव है उनमें से किसी पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़े, तो किसी पर बहुत ज्यादा; जबकि एक ही कारण रहने पर एक सा परिणाम होना चाहिए था। अतः चित्त को समझने का प्रयास किया जाना चाहिए।

35-दुन्निगहस्स लहुनो, यत्थकामनिपातिनो
चित्तस्स दमथो साधु, चित्तं दन्तं सुखावहं।

भावार्थः- बुद्ध के समय में कोसल देश में पहाड़ पर एक गाँव था। उसमें एक उपासिका रहती थी, जिसने अपने चित्त को समझ लिया था और पाँच अभिज्ञाओं में से, जिसमें एक परचित्त ज्ञान भी सम्मिलित है, से युक्त थी। वह सबके चित्त को जानकर उनके मन की बात कह देती थी। एक भिक्षु उसकी प्रशंसा को सुनकर वहाँ गया, लेकिन वह जल्दी ही लौटकर चला आया। उसे ऐसा करते देख बुद्ध ने पूछा- क्यों भिक्षु! तुम इतना जल्दी वापस चले आये? उसने कहा 'हाँ भन्ते' मैं वहाँ न रह सका। वह उपासिका हमारे सोचने के क्षण ही सब जान लेती है। मैं एक सामान्य जन हूँ। बुरा भी विचार आता है। वह पकड़ लेती है। अतः मैं वहाँ न टिक सका। उस पर बुद्ध ने उस भिक्षु से कहा यदि तुम वहाँ न जाना चाहो तो भी अपने चपल, चालाक चित्त की रक्षा हर क्षण करते रहो, इस संदर्भ में उक्त गाथा को गाया था।

चित्त को पकड़ना, चित्त को नियंत्रित करना आसान नहीं है, क्योंकि यह एक तो अरूपी है; दूसरा चित्त को कौन नियंत्रित करे? स्वयं स्वयं को कैसे पकड़ेगा? क्या अपने कन्धे पर कोई स्वयं चढ़ सकता है? क्या अंगुली स्वयं अपने सिरे को छू सकती है? कैसे छूयेगा? स्वयं स्वयं को? जैसे तलवार स्वयं अपने को काट नहीं सकती, उसी प्रकार चित्त स्वयं अपने को नियंत्रित करे? पकड़े यह असंभव है। तो कैसे पकड़े? बस अपने में स्थित हो जाय, अपना क्या है देखे, अन्तर्मुखी होकर खो जाये। वहाँ किसी भी प्रकार का द्वैत नहीं रहेगा, व्यापार नहीं रहेगा। न विषय होगा, न विषयी होगा। अनन्त शान्त अवस्था होगी। उसे हम अपने चित्त को पकड़ने की संज्ञा दे सकते हैं। जैसे व्यक्ति कहता है कि मैं आकाश देख रहा हूँ। उससे पूछें क्या देख रहा है? व्यक्त न कर सकेगा। आकाश को देखोगे, तुम खो जाओगे, शून्य हो जाओगे। शून्य हो जाना, निद्रवन्द्व हो जाना ही शान्त अवस्था है। यदि इसे समझ लोगे, तो पाओगे कि सभी रूप-रंग, घट-पट आदि शून्य-स्वरूप हैं। घट है क्या? परीक्षा करने पर शून्य के अतिरिक्त क्या है? इसे जानना ही चित्त का निग्रह करना है। लेकिन इस पर असंख्य कल्पों से हमने धूल जमा कर रखी है, संस्कार भर कर रखा है, वह हमें हर क्षण, एक जगह से दूसरी जगह का नक्शा दिखाते चलता है, इतना शीघ्रगामी है। शीघ्रगामी ही क्या, उसमें तो सभी समाया हुआ है। क्या हमें पास की वस्तु को समझने और हजारों किलोमीटर की वस्तु को समझने में कम-ज्यादा समय लगता है? नहीं। अपने घर के नक्शे को अपने चित्त में लाने और सुदूर अमेरिका को अपने मन में लाने में क्या एक-सा समय नहीं लगता है?

इससे ऐसा नहीं लगता कि हम कमरे में नहीं, कमरा हममें है; हम गाँव में नहीं, गाँव अपने अन्दर में है; दुनिया अपने अन्दर समायी हुई है। चित्त से भिन्न कुछ नहीं है। चित्त ही है जो बाह्य रूप होकर हमें चित्त से भिन्न सा दिखाई देने लगता है। जहाँ चाहे वहाँ चले जाना हमें यह नहीं दर्शाता कि चित्त से बाहर कुछ है ही नहीं? यदि इसे समझ लिया, तो आपने अपने मन को नियंत्रित कर लिया, क्षण में अभिसंबोधि को प्राप्त कर लिया। यदि सभी वस्तुओं का स्वभाव आपसे अभिन्न है, तो भेद कहाँ रहेगा?

जब सब कुछ चित्त में ही कहें, तो अपने स्वरूप क्या है? चित्त का स्वरूप क्या प्रपंच रहित शून्यमात्र नहीं है? जैसे सागर में बर्फ गिर रही हो, ज्यों ही बर्फ सागर पर गिरी त्यों ही सागरमय हो गई। वैसे ही विकल्प, विचार आदि ज्यों ही उत्पन्न हुआ त्यों ही शून्य में विलीन हो गए, विकल्प का उत्स ही वह सागर रूपी चित्त था। सागर से भाप बन कर आकाश में न उड़ता, तो आकाश से बर्फ के रूप में न गिरता? बर्फ भी सागर का ही रूप है। उसी प्रकार चित्त-वृत्तियों का मूल भी वह चित्त ही है, अतः सिद्धाचार्यों ने कहा है कि चित्त को समझने का और उस तक पहुँचने का आधार मात्र चित्त की वृत्तियाँ ही हैं, विकल्प ही हैं, जो अपने उत्स परम शून्य तक पहुँचाते हैं। अन्यथा कोई दूसरा मार्ग नहीं। इसलिए चित्त को पकड़ना तब तक मुश्किल है, जब तक हम चित्त की विकल्प आदि वृत्तियों को न समझें।

36-सुदुद्दसं सुनिपुणं, यत्थकामनिपातिनं
चित्तं रक्खेय मेधावी, चित्तं गुत्तं सुखावहं।

भावार्थः- श्रावस्ती में एक सेठ का पुत्र धर्म में श्रद्धा उत्पन्न हो प्रव्रजित हो गया लेकिन कुछ दिन उसने सोचा धर्म और विनय इतने महान् हैं कि इन सबका पालन नहीं किया जा सकता। अतः घर जाना चाहा। इसे देखकर तथागत ने उससे उक्त गाथा को गाते हुए कहा कि "तू केवल एक चित्त की रक्षा कर, यदि तुम उसकी रक्षा कर लोगे तो अन्यों की रक्षा करना जरूरी नहीं है।"

वास्तव में यदि हम तटस्थ होकर सोचें, तो हमारे मन में क्या-क्या कूड़ा-करकट भरा हुआ है, कोई ज्ञानी हमारे चित्त को देख रहा हो तो वह हमारी मूर्खता पर हंसता होगा। यह तो गनीमत है कि हम अपने अन्दर की चीज को बाहर नहीं दिखाते। यदि एक क्षण के लिए भी किसी ने हमारे अन्दर के विचारों को जाना या देखा तो हम शर्म के चलते मर जायेंगे। वास्तव में मनुष्य कितना विरोधाभासी जीवन जीते हैं? कहते कुछ हैं, सोचते कुछ; करते कुछ हैं, बोलते कुछ। अन्दर से जल रहे हैं, बाहर से हँस रहे हैं। अन्दर से किसी को समूल नष्ट करने की सोच रहे हैं, बाहर से भलाई का मार्गदर्शन सा कर रहे हैं। जब तक यह विरोधाभास हमारे अन्दर रहेगा, तब तक सुख की आकांक्षा मृग-मरीचि के समान बनी रहेगी। इसलिए हमें कथनी और करनी को एक कर अपने चित्त की रक्षा करनी चाहिए। बिना चित्त की रक्षा किये सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

37-दूरङ्गमं एक चरं, असरीरं गुहासयं
ये चित्तं संयमेस्सन्ति, मोक्खन्ति मारबन्धना।

भावार्थः- बुद्ध के समय श्रावस्ती में संघरक्षित नाम का भिक्षु रहता था। उसे एक दिन दान में दो चीवर (वस्त्र) मिल गये। उनमें से एक उसने अपने आचार्य को भेंट करना चाहा, लेकिन गुरु ने उसे नहीं लिया। उसके बाद वह ताड़पत्र के पंखे से अपने गुरु को पंखा झाल रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि अब गुरु मेरे से यह चीवर भी नहीं ले रहे हैं, तो मेरा यहाँ रहना बेकार है। अब वापस गांव जाकर इन दोनों चीवरों को बेच दूँगा और उन पैसों से भेड़ खरीद लूँगा। क्रमशः भेड़-बकरी की वृद्धि होने पर गाय लूँगा, फिर घोड़ा लूँगा। जब इस प्रकार मैं अमीर हो जाऊँगा, मुझे एक सुन्दर स्त्री भी मिल जायेगी। उससे शादी कर लूँगा और फिर अपने बच्चों के साथ गुरु के दर्शन के लिए संघाराम में आऊँगा। मार्ग में बच्चे इधर-उधर जायेंगे तो अपने पत्नी से बच्चों को देखने के लिए कहूँगा। यदि मेरी बातों को पत्नी नहीं सुनी तो मारूँगा। ऐसा सोचते-सोचते पंखे से गुरु जी को मार दिया। इस पर स्थविर (गुरु) ने आवुस! आयुष्मान (अपने से कनिष्ठ भिक्षुओं को आवुस या आयुष्मान् कह कर सम्बोधन किया जाता है, वरिष्ठ को भन्ते और संघपति को स्थविर के नाम से सम्बोधित किया जाता है) "तूने स्त्री को मारते हुए मुझे ही मारा" संघरक्षित यह सोच कर कि स्थविर मेरी बात जान गये, भागना शुरू कर दिया। उसे तरुण श्रामणेर ने दौड़कर पकड़ लिया और उसे बुद्ध के पास ले गये।

बुद्ध ने सब पूछ कर उसे उपदेश देते हुए उक्त गाथा को कहा था "भिक्षु मत चिन्ता करो, यह चित्त दूरगामी है।" क्या-क्या योजनायें बनाता है, भूल ही जाता है कि मैं यहाँ कुछ समय के लिए हूँ, मरकर कुछ वर्षों के बाद किसी और स्थान, मकान या घर को अपना मान फिर योजना बनाना पड़ेगा। यही कारण है कि असंख्य कालों से हम यहाँ इसी प्रकार योजना बनाते चले जा रहे हैं। चित्त को सहयोग की आवश्यकता नहीं। यह कभी स्वयं अपने को राजा बना देता है और कभी कुछ, निरंतर चित्त विचरण करता रहता है। एक क्षण भी आराम नहीं करता। प्रातः बिस्तर से क्या उठे, विचारों की, योजनाओं की श्रृंखला शुरू हो जाती है। यह चित्त निराकार आकाश के जैसे व्याप्त है। ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ आकाश न हो, उसी प्रकार ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ यह चित्त न पहुँचता हो। अत्यन्त गुह्य यह चित्त जिसे जानना-समझना मुश्किल है, किस क्षण क्या सोच लेगा? क्या करने को कहेगा? क्या कर जायेगा?

कुछ भी निश्चित नहीं है। इस असीमित शक्ति से युक्त चित्त पर जिसने नियंत्रण पा लिया, मार उसका क्या बिगाड़ सकेगा? वह विश्व को जीत लेगा, जिसने अपने चित्त पर काबू पा लिया, उसने सबकुछ पा लिया। अतः मैं समझता हूँ कि चित्त की सुरक्षा या चित्त पर नियंत्रण से बढ़कर और क्या कार्य श्रेष्ठ हो सकता है? आखिर चित्त पर विजय पाना ही तो निर्वाण की प्राप्ति है। उससे अमूल्य वस्तु क्या हो सकती है?

38-अनवट्ठितचित्तस्स, सद्धम्मं अविजानतो
परिप्लवपसादस्स, पञ्ञा न परिपूरति।

भावार्थः- यद्यपि चित्त का स्वभाव शान्त है, जैसे पानी का स्वभाव शीतल एवं शान्त है। लेकिन जिस प्रकार पानी को आगन्तुक मल गंदा कर देता है, उसी प्रकार चित्त को भी विकार, क्लेश, राग-द्वेष आदि कलुषित कर देते हैं और व्यक्ति को वस्तु की वास्तविक स्थिति को जानने में बाधा पहुँचाते हैं। जिसका चित्त अनस्थिर और चंचल हो वह सद्धर्म को नहीं जान सकता और न ही उसकी प्रज्ञा पूर्ण होगी। अतः व्यक्ति को विभिन्न क्लेशों से युक्त चित्त को इस प्रकार जानना चाहिए-जब चित्त राग से युक्त हो जाता है तो यह रंग से रंगीन पानी सदृश है, इस प्रकार इसकी गहरायी में क्या है, यह दिखायी नहीं पड़ता। जब चित्त द्वेष से युक्त हो जाता है, तो यह उबलते हुए पानी की तरह है। तब आपकी प्रज्ञा या विवेक कुछ काम नहीं कर पाता। मोह से युक्त चित्त वैसा ही जैसा एकत्रित हुआ पानी जब सड़ जाता है और मच्छर आदि बीमारियों के पैदा होने का कारण बन जाता है। इस प्रकार इन विकारों के प्रभाव में आकर किया गया कोई भी निर्णय कभी सही नहीं हो सकता।

बौद्ध धर्म में 'धर्म' का अर्थ ही ''चित्त की शुद्धता को धारण करना'' है। जो भी व्यक्ति, भले ही वह स्वयं को किसी धर्म, जाति या वंश का कहे, यदि वह चित्त की शुद्धता को धारण कर तद्नुरूप जीता है, तो वह बौद्ध है। बुद्ध का अर्थ ही बोध होना या जानना है। चित्त को जानने वाला ही बौद्ध है। इस प्रकार धर्म और धार्मिकता के मूल में चित्त सर्वोपरि है। व्यक्ति के व्यक्तित्व की पराकाष्ठा चित्त की शुद्धता ही है। संसार और निर्वाण का आधार भी चित्त ही है। सारा संसार चित्त की ही अभिव्यक्ति है। सारे व्यक्तिगत और सामाजिक सम्बन्धों का ताना-बाना, नैतिकता, आदर्श आदि मूल्य इसी चित्त की अभिव्यक्ति ही तो है। तनावग्रस्त या विकारों से युक्त चित्त कभी शान्ति, सहज एवं खुशी का अनुभव नहीं कर सकता। खुलापन एवं शान्त-चित्त के बिना व्यक्ति यथाभूत, यथास्थिति तथा निष्पक्ष निर्णय नहीं दे सकता या उचित कदम नहीं उठा सकता। प्रज्ञा के उत्पन्न होने के लिए चित्त में स्थिरता लाना आवश्यक है। चित्त की स्थिरता शील के आचरण से ही होती है, अतः सम्पूर्ण बौद्ध वाङ्मय का सार शील, समाधि और प्रज्ञा है।

39-अनवस्सुत चित्तस्स, अनन्वाहत चेतसो
पुञ्ञपापपहीनस्स, नत्थि जागरतो भयं।

भावार्थः- बुद्ध के समय की बात है। श्रावस्ती में एक गृहस्थ अपने खोये बैल को खोजते हुए किसी उपवन में पहुँचा, जहाँ भिक्षु लोग रहते थे। उसे उनका रहन-सहन बहुत अच्छा लगा और वहीं प्रव्रजित हो गया। लेकिन फिर कुछ दिन बाद बेचैन होकर घर चला गया, गृहस्थ बन गया। इस प्रकार उसने ऐसा कई बार किया। जब अन्तिम सातवीं बार ऐसा करना चाहा, तो भिक्षुओं ने उसे प्रव्रजित करने से मना कर दिया। लेकिन उसके द्वारा बहुत प्रार्थना करने पर उसे पुनः प्रव्रजित कर दिया। इस प्रकार अन्ततोगत्वा उसने अर्हत्त्व को प्राप्त कर लिया और गृहस्थी एवं गाँव से ही क्या, सम्पूर्ण संसार से अनासक्त हो गया।

यह कहानी हमें लोगों के चित्त की दशा को बताती है। कितनी बार हमारे विचारों में परिवर्तन आता है, दिन और सप्ताह की बात तो दूर, क्षण-क्षण में कितनी बार विचारों में परिवर्तन आता है। यह विचारों की श्रृंखला इसी जन्म में नहीं, जन्म-जन्मांतरों में आती रहेगी और हम उत्कण्ठित, बेचैन होते रहेंगे, जब तक निर्वाण का लाभ न कर लें।

चित्त के मल रहित होने तक यह बेचैनी बनी रहेगी, चाहे आपके पास सभी भौतिक सुख-सुविधाएँ क्यों न हो? प्रायः हमारे पास आवश्यक भौतिक वस्तुयें उपलब्ध होती ही हैं, यदि वह न होतीं तो आज हम जीवित न होते। इसके उपरान्त क्या हम खुश हैं? बड़े से बड़े पदासीन व्यक्ति और अमीर से अमीर व्यक्तियों की मनोदशा को देखें, पता चलेगा कि वे कितने बेचैन हैं? आतंकित हैं? दुनियाँ में कितने ऐसे लोग हैं? जिनको सोने के लिए नींद की गोलियाँ या शराब पीना पड़ता है। यही नहीं, वह कौन सी चीज है? जिसे अपने पास लाखों की सम्पत्ति के रहते हुए भी व्यक्ति को चोर और भ्रष्ट बनाती है, क्रूर बना देती है, निर्दयी बना देती है। जब तक हमारा अपने चित्त पर नियंत्रण नहीं रहेगा, तब तक भय आदि समस्याएँ बनी रहेंगी। वही व्यक्ति सुखी होगा जो क्लेश रहित, आकर्षण और विकर्षण से रहित, जागरूक हो अपने चित्त की निरंतर रक्षा किये रहता हो, उसे किसी प्रकार का भय नहीं सतायेगा।

40-कुम्भूपमं कायमिमं विदित्वा, नगरूपमं चित्तपमं चित्तमिदं ठपेत्वा
योधेथ मारं पञ्ञावुधेन, जितञ्च रक्खे अनिवेसनो सिया।

भावार्थः- श्रावस्ती में पाँच सौ भिक्षु बुद्ध से (कर्म-स्थान) एकाग्र ध्यान का आलम्बन लेकर गाँव से दूर जंगल में जाकर एकान्त में ध्यान करने लगे। वहाँ देवताओं ने उन्हें भय दिखाया। वे भयभीत होकर बुद्ध की शरण में आये। पुनः बुद्ध ने उन्हें करणीयमेत्तसूत्र का पाठ करते हुए वहीं रहने के लिए कहा। इस बार देवताओं ने प्रत्येक की रक्षा की और सभी ने दृढ़ता के साथ एकाग्र होकर अनित्यता क्षण का अनुभव किया। उसी समय बुद्ध देव ने उक्त गाथा को गाया था।

एक दृष्टि से जहाँ देवता हैं, तो वहाँ असुर, मार भी अवश्य ही होंगे। यद्यपि हम अपनी आँखों से देवी-देवताओं को नहीं देखते, लेकिन मानते हैं। उसी प्रकार राक्षस या दानव आदि भी होते हैं? जिनका कार्य हर समय प्राणियों का उत्पीड़न करना होता है। उनके शमन के लिए ग्रन्थों में विभिन्न सूत्रों के पाठ का प्रावधान है। उसके पाठ से वे शान्त होते हैं और हमारी भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र की समृद्धि में सहायक होते हैं। दूसरी ओर हम दानवों का स्वयं निर्माण करते हैं, हम धारणा बना लेते हैं। यहाँ अमुक दानव रहता है, वहाँ अमुक-अमुक। जैसे तिब्बत के सिद्ध भट्टारक मिलारसपा के साथ हुआ था। वे एक पहाड़ पर बनी गुफा में साधना के लिए गये थे। उन्हें भय अथवा संदेह सा उत्पन्न हो गया और वे गुफा के तंग रोशनदान के अन्दर ताकने लगे कि भूत, दानव तो नहीं हैं? उस पर तुरन्त एक राक्षस ने प्रकट होकर कहा-हाँ! देखो मिलारसपा मैं यहाँ हूँ। तुमने मुझे स्मरण किया, अतः यहाँ प्रकट होना पड़ा। यदि तुम विकल्परूपी दानव या उसके भय को नहीं छोड़ोगे तो मैं ही नहीं, अनेकों राक्षस यहाँ उपस्थित होंगे। यह स्वयं पर निर्भर करता है कि आप किसे स्मरण करते हैं, किसे भुलाते हैं। जिसे स्मरण किया, जो सोचा, क्रमशः वही बनता जाता है। अतः इस शरीर के प्रति मोह, आसक्ति का परित्याग कर चित्त को दृढ़ कर, स्वयं अपने को नियंत्रित करना चाहिए। जो ऐसा करता है, दुनियाँ उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। यह आप ही हैं कि किसे स्वीकार करना चाहेंगे और किसे नहीं। अतः निरंतर अपने चित्त की रक्षा करते रहना चाहिए।

41-अचिरं वतयं कायो, पठविं अधिसेस्सति
छुद्दो अपेतविञ्ञाणो, निरत्थवं कलिङगरं।

भावार्थः- श्रावस्ती का एक गृहस्थ अत्यन्त श्रद्धापूर्वक प्रव्रजित हुआ। उसका नाम तिस्स स्थविर पड़ा। कुछ दिनों के बाद स्थविर के शरीर में बहुत से फोड़े हुए। बहुत कुछ दवा करने पर भी जब अच्छा नहीं हुआ, तब उसके सहायक भिक्षु उसे छोड़ दिये। वह अत्यन्त घृणितावस्था को प्राप्त हो चारपाई पर पड़े-पड़े कराहता था। एक दिन भगवान् ने उसे अपनी महाकरुणा-समापत्ति में देखा और वहाँ जाकर पानी गर्म कराया तथा स्वयं उन्होंने स्नान कराया। स्नान के पश्चात् उसे चारपाई पर सुलवा दिया। उसी समय भगवान् ने "भिक्षु! यह तेरा शरीर विज्ञान रहित हो काष्ठ की भाँति भूमि पर पड़ा रहेगा।" अतः ऐसा सोच शरीर से मोह त्याग कर इससे दुःख भी कम होगा और निराश होकर शरीर को

भी त्याग सकोगे। कहते हुए उक्त गाथा को कहा-

वास्तव में यदि हम गहराई से सोचें, जितना भी दुःख है, वह इस शरीर के चलते आ रहा है। वहीं जितनी भी सुख-सुविधायें हैं, वह दूसरों से आ रहीं है। इसके उपरान्त भी हम इसी शरीर से इतना प्यार करते हैं? जिसका परिणाम दुःख ही होता है। इसीलिए निर्वाण चाहने वाला इस शरीर को दुःख का केन्द्र मानकर उससे निरासक्त होना चाहता है। जैसे-जैसे इस शरीर के प्रति आपका मोह भंग होगा, इसके प्रति सोचना छोड़ देंगे, तो चित्त शरीर से निर्लिप्त हो जायेगा और व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाएगा, क्योंकि मृत्यु के समय चित्त अन्य शरीर में सन्धि नहीं करेगा। जैसे कि संसार में प्रारम्भ में जिस व्यक्ति से आप बहुत प्यार करते हैं, उससे एक बार बातचीत किये बगैर रह नहीं सकते थे, जब उसके दोष को देखा तो आप क्रमशः उससे दूर-दूर होते जाते हैं। एक समय ऐसा आ जायेगा कि उसे आँखों तक से देखना न चाहेंगे, बातें करना या मिल-बैठना तो दूर, ऐसा होने पर उससे सम्बन्ध विच्छेद हो जायेगा। उसी प्रकार साधक लोग भी इस शरीर के प्रति मोह रहित बन जाते हैं, क्योंकि वे दुःख का कारण संसार में इस शरीर का होना मानते हैं।

हमें सुख-दुःख आदि इसके प्रति स्नेह के चलते आता है। जब हमारा किसी व्यक्ति के प्रति सम्बन्ध एवं लगाव नहीं होता, तो उसके ऊपर जो भी हृदय विदारक घटना घटे, तो भी कुछ वेदना नहीं होती। जबकि वही घटना किसी अपने मित्र या परिवार के साथ घटी हो, हमें अत्यन्त पीड़ा होती है। जबकि अपने से भिन्न दोनों हैं, लेकिन हमारी आसक्ति ने हमें दुःख दिया। बुद्धों का जीवन स्वच्छन्द होता है, निर्लिप्त होता है। उनकी प्रशंसा-निन्दा आदि सभी घटनायें मानो खुले आकाश में हो रही हैं, कहीं अटकती नहीं, पता भी नहीं लगता कि कुछ घटा भी है या नहीं। आखिर हमारे चित्त का स्वरूप भी सर्वव्यापी अप्रतिहत आकाश सदृश ही तो है।

42-दिसो दिसं यं तं कयिरा, वेरी वा पन वेरिनं
मिच्छापणिहितं चित्तं, पापियो नं ततो करे।

भावार्थः- श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक सेठ की गौवों की रक्षा करने वाला नन्द नाम का एक ग्वाला था। उसने भगवान् को भिक्षु संघ के साथ निमंत्रित करके एक सप्ताह पंचगोरस दान दिया। सातवें दिन जब भगवान् दानानुमोदन करके चलने लगे, तब वह भगवान् का पात्र लेकर पीछे-पीछे चला। थोड़ी दूर जाने पर भगवान् ने उससे पात्र लेकर लौट जाने को कहा। वह लौट ही रहा था कि एक ब्याघ्र ने उसे मार डाला। पीछे आने वाले भिक्षुओं ने उसे मरा देख भगवान् से कहा-"भन्ते! यदि आप उसके यहाँ दान ग्रहण करने नहीं गये होते तो वह नहीं मरता।" यह सुनकर भगवान् ने कहा- "भिक्षुओं! मैं जाता या नहीं जाता, वह मृत्यु से नहीं छूटता। लेकिन वह तो भिक्षु संघ सहित मेरी सप्ताह भर सेवा कर कुशल चित्त के साथ मरा जिससे उसने सुगति को प्राप्त किया। लेकिन जिसे चोर या वैरी नहीं कर सकते हैं, उसे इन प्राणियों के भीतर बुरा और झूठे मार्ग पर लगा हुआ चित्त करता है।" कहकर उक्त गाथा को कहा- जितना हम आज परेशान हैं, वह हमारे शत्रुओं अर्थात् वैरी दुश्मनों के द्वारा पैदा की गई समस्याओं से नहीं, अपितु हमारे अन्दर स्थित राग, द्वेष, मोह, ईर्ष्या, लालच और स्वार्थ-भावना के चलते हैं।

बाह्य शत्रु हमारी बहुत ज्यादा हानि नहीं कर सकता। ज्यादा से ज्यादा हमारी जान ही तो ले सकता है, वह हमें नरक आदि में भेज नहीं सकता। धन-सम्पत्ति ही छीन सकता है, हमारे द्वारा संचित कुशल कर्म को तो वह छीन नहीं सकता। जो व्यक्ति परजन्म को मानता है, उसके लिए इस जीवन का 50-60 वर्ष कोई बहुत मायने नहीं रखता कि वह कठिनाई से जी रहा है। आने वाला जीवन अनन्त है। जब तक बुद्धत्व की प्राप्ति नहीं होगी, तब तक उसे इस शरीर को लेकर कष्ट उठाते रहना है। ऐसे में क्या यह अच्छा नहीं कि जब हमारे पास क्षान्तिपारमिता अर्थात् अपने शत्रु को

क्षमा करने का अवसर उपलब्ध है, उसका लाभ लेकर पुण्य का संचय करें? यदि ऐसा न कर हम विरोध करते रहें, तो न विरोधियों का खात्मा हो सकता है और न ही हम खुश रह सकते हैं। अतः हमें चाहिये कि मन को कुमार्ग पर जाने से बचायें। यदि यह कुमार्ग पर चला गया, तो इसे वहाँ से लौटा ले आना मुश्किल हो जायेगा और यह ऐसे-ऐसे कुकृत्य करने लगेगा, जिसकी हम कल्पना नहीं कर पायेंगे। जन्म-जन्मान्तर में यह हमें नरक का भागी बनाकर छोड़ देगा। चित्त को पवित्र बनाने से बढ़कर दूसरी कोई चीज हमें बहुमूल्य नहीं लगनी चाहिए। इसी में सुख एवं शान्ति है।

43-न तं माता पिता कयिरा, अञ्ञे वापि च ञातका
सम्मापणिहितं चित्तं, सेय्यसो नं ततो करे।

भावार्थः- बुद्ध के समय श्रावस्ती में सोरेय्या नाम का भिक्षु रहता था। पहले जब वह गृहस्थ था, उसके दो पुत्र हुए। बाद में उसका लिंग परिवर्तन हुआ और वह स्त्री बन गई। पुनः उसके दो पुत्र हुए थे। जब लोग उससे यह पूछते थे कि चार पुत्रों में तुम्हें सबसे अधिक प्यार किससे है? इस पर वह अपने कोख से उत्पन्न पुत्र पर अधिक प्यार होने की बात कहती थी। लेकिन जब वह प्रव्रजित हो गई, तब उसने कहा कि मुझे किसी पर मोह या स्नेह नहीं है, प्यार नहीं है। इस पर उक्त गाथा को बुद्ध ने कहा था। जब व्यक्ति का चित्त सन्मार्ग पर लग जाता है, वह किसी एक व्यक्ति का न होकर सर्वव्यापक हो जाता है, सबका हो जाता है, सबको समान देखता है। स्नेह, प्यार यह सब पाक्षिक होता है, स्वार्थ प्रेरित होता है। जिसे आप स्नेह करते हैं, उससे आपके अन्दर चाह रहती है, आकांक्षायें रहती हैं, आशा रहती है। यही कारण है कि जब आपका वह प्यारा, स्नेही आपके विचारों के प्रतिकूल हो जाता है, आप उन पर आग-बबूला हो जाते हैं, क्रोध करते हैं, जितना प्रगाढ़ प्यार था उतना प्रगाढ़ क्रोध उत्पन्न हो जाता है। अतः करुणा या मैत्री, व्यक्ति को समदर्शी बनाते हैं क्योंकि वहाँ आशा नहीं, आकांक्षा नहीं। अतः आपके प्रतिकूल होने पर भी आपको ठेस नहीं पहुँचती। आपका प्रेम उसके लिए आशा से प्रेरित नहीं था, मात्र प्रेम करना चाहते थे। दूसरी ओर जो अपना स्नेहयुक्त पुत्र है, यह जरूरी नहीं कि वह हमारी सेवा के लिए उत्पन्न हुआ हो। जबकि आज के इस युग में तो ज्यादातर ऐसा ही देखा जाता है कि जो अपनी संतान है, वे पूर्वजन्म के मानो हमारे देनदार थे या जिनको हमने कष्ट दिया था, उन्होंने उसका बदला लेने के लिए अपने परिवार में जन्म लिया है, जो अपना कह कर हमें अत्यन्त परेशान करते रहते हैं। इस संदर्भ में तथागत बुद्ध के समय अर्हत् कात्यायन के साथ घटी घटना द्रष्टव्य है, यथा- एक दिन अर्हत् कात्यायन गंगा के किनारे भ्रमण करने निकले। वहाँ गंगा के किनारे एक मछुआरिन गोद में अपने नवजात शिशु लिए मछली का भक्षण कर रही थी और सामने बैठे कुत्ते को भोजन के दौरान बाधा महसूस कर पत्थर मारकर भगा रही थी। जब कात्यायन ने इस दृश्य को अपनी अभिज्ञा बल से देखा तो हँस पड़े। वास्तव में पूर्वजन्म में मछली उस मछुआरिन की पिता, कुत्ता उसकी माता और गोद में लिया हुआ शिशु उनके द्वारा हत्या किये हुए किसी शत्रु का था।

इसी प्रकार महान् योगी मिला-रेपा ने भी अपने गीत में कहा है कि प्रारम्भ में बच्चा आँखों का तारा होता है, देवता सदृश होता है, जबकि युवावस्था में माता-पिता के संचित धन को नाश करने वाला होता है और प्रौढ़ावस्था में शादी-विवाह के उपरान्त पत्नी के प्रति अत्यन्त लगाव होने से अपने माता-पिता को मूर्ख साँड़ की भाँति लात मारकर भगाने वाला होता है। अतः किन्हीं भाग्यशाली माता-पिता को ही ऐसा पुत्ररत्न मिलता है जो सच्चे दिल से उनकी सेवा करे। इसलिए इस संसार की विचित्रता को देखकर धर्म में संलग्न होना ही उत्तम है। अतः इस जगत् में न अपना कोई स्थायी पुत्र-सन्तान है या वैरी-दुश्मन, सभी समान हैं। यदि ऐसी मैत्री और समता की भावना जगी, तो उससे बढ़कर हमारा कल्याण न माता-पिता कर सकते हैं और न मित्र-बन्धु। इसी का अभ्यास करना चाहिए, कर्मफल पर विश्वास जगाना चाहिए, जिससे हम अपने चित्त को पवित्र बना सकें।

------ पालिगाथाएँ धम्मपद से साभार -----

मेरे जीवन की एक यात्रा के दौरान दुर्घटना

श्री विवेक मिश्रा
वरिष्ठ लेखाकार,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

उत्तराखंड के सबसे खूबसूरत पर्यटन स्थलों में से एक है 'नैनीताल'| नैनीताल एक विलक्षण पर्वतीय स्थल है जो कुमाऊं की पहाड़ियों के बीच में स्थित है । इस पर्यटक स्थल के बीच एक अनोखी झील है, जिसे “नैनी झील” के नाम से जाना जाता हैं। नैनीताल अपने खूबसूरत परिदृश्य और शांत वातावरण के कारण पर्यटकों के लिए “स्वर्ग” के रूप में जाना जाता है। प्राकृतिक सुंदरता में झीलों के शहर के रूप में प्रसिद्ध नैनीताल की खूबियों को देखने एवं वहां के दुर्लभ दृश्यों को अपनी आंखों में कैद करने के लिए मैंने अपनी पत्नी एवं दोनों पुत्रों सहित अगस्त 2018 में यात्रा कार्यक्रम सुनिश्चित किया ।

प्रयागराज (तत्कालीन नाम-इलाहाबाद) से काठगोदाम, जो कि नैनीताल का सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन हैं, तक हमने रेल से यात्रा करने के लिए रिजर्वेशन करा लिया और यात्रा कर काठगोदाम पहुँच गए । चूंकि काठगोदाम से नैनीताल तक केवल सड़क मार्ग ही उपलब्ध है जिसकी दूरी 36 किमी. है और जिसमें लगभग 2 घंटे का समय लगता है, इसलिए हमने रेलवे स्टेशन से ही एक टैक्सी (आल्टो कार) बुक कर ली। मेरा छोटा बेटा केवल 8 माह का था इसलिए उसके लिए अत्यधिक व्यवस्था करनी थी तो हमने नैनीताल पहुचकर झील के पास ही एक होटल में कमरा बुक कर लिया। जहां से मार्केट पास थी। वहीं से हमने अगले 3 दिनों में घूमने के लिए उसी टैक्सी को बुक कर लिया जिससे हम नैनीताल पहुँचे थे । टैक्सी ड्राइवर ने पहले दिन नैनीताल की चार खूबसूरत झीलों - भीमताल, साततात, नौकुचियाताल और खुर्पाताल के दीदार कराये । दूसरे दिन हमने मालवाताल, हरिश्ताल और लोखमताल के अद्भुत नज़ारों को अपनी आंखों में संजोया । देश की 51 शक्तिपीठों में से एक 'नैना देवी' मंदिर के दर्शन किये, नैनीताल झील में बोटिंग का आनंद लिया और होटल लौटने के दौरान आकर्षक मॉल रोड पर मार्केटिंग की। अगस्त का महीना बारिश का महीना होता है, तो वहां पर घूमने के दौरान कई बार बारिश का सामना भी करना पड़ा।

पहले दो दिनों में नैनीताल की सड़कों पर घूमने और वहां के नयनाभिराम खूबसूरत दृश्यों को देखने के बाद हमारे रोमांच का स्तर ऊंचा हो गया था, सो हमने तीसरे दिन नैनीताल से लगभग 51 किमी. दूरी पर स्थित "मुक्तेश्वर धाम" की यात्रा एवं दर्शन का मन बना लिया । यह मंदिर भारत में स्थित प्राचीन मंदिरों में से एक है जो लगभग 350 साल पुराना है। यह मंदिर इस संसार की रचना करने वाले भगवान् शिव को समर्पित है। मुक्तेश्वर में सबसे ऊँचे स्थान पर यह मंदिर स्थित है और इस स्थान का नाम भी इस मंदिर के नाम पर रखा गया है।

इस मंदिर को हिंदू धर्मग्रंथ में भगवान शिव को समर्पित अठारह सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक के रूप में जाना जाता है। मुक्तेश्वर मंदिर एक धार्मिक स्थल होने के साथ-साथ एक अद्भुत पर्यटन स्थल भी है जो पर्यटकों को ऊंचाई से प्रकृति के खूबसूरत दृश्य का दर्शन करता है। इस प्राचीन मुक्तेश्वर मंदिर में सफेद संगमरमर का शिव लिंग है, जिसमें एक तांबे का योनी है। शिवलिंग के साथ ही यहां पर भगवान गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, पार्वती, हनुमान, और नंदी सहित अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी स्थापित हैं।

इस मंदिर को श्री मुक्तेश्वर महाराज जी का निवास भी माना जाता है । इस मंदिर में ध्यान लगाने के लिए एक उपयुक्त स्थान भी है। इस प्राचीन मंदिर में दर्शन करने एवं वहाँ से प्रकृति का मनमोहक दृश्य देखने के पश्चात हम उसी टैक्सी से वापस नैनीताल के लिए लौटने लगे जिससे हम वहाँ गए थे। शाम को करीब 4 बज रहे थे। मैं अपने बड़े बेटे के साथ टैक्सी में आगे की सीट पर बैठा था और मेरी पत्नी मेरे छोटे बेटे को गोद मे लेकर पीछे की सीट पर बैठी थीं। थकने के कारण बच्चों को टैक्सी में नींद आने लगी और हम भी आराम से सीट पर रिलैक्स होने लगे । इसके बाद हमारे साथ जो हुआ उसके बारे में शायद हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था।

नैनीताल से कुछ 4 से 5 किमी पहले रास्ते में एक यू टर्न आया जिसमें बायीं तरफ़ खाई थी । उस यू टर्न पर पहुँचते ही अचानक हमारी टैक्सी बाएं हाथ में लगे रेलिंग से सीधे टकरा गयी। उस समय टैक्सी की रफ्तार लगभग 45 किमी./घंटे की रही होगी। टक्कर इतनी तेज हुई कि टकराने के बाद टैक्सी दो राउंड घूम कर विपरीत दिशा में जाकर रुकी। ईश्वर की कृपा थी कि सामने से कोई गाड़ी नही आ रही थी, नहीं तो बड़ा हादसा भी हो सकता था । मेरा सिर टैक्सी के आगे के शीशे से टकरा

गया था जिससे कि शीशा चटक गया और कांच के टुकड़े मेरे सिर में धस गए थे। बड़े बेटे के सिर, कंधे और हाथ में बहुत चोट लग गई थी। पत्नी भी बगल के दरवाजे और टैक्सी की छत से टकराई जिससे उन्हें सिर में चोट लग गयी थी। वो तो ईश्वर की कृपा थी कि पत्नी की गोद मे सो रहा छोटा बेटा गोद में होने के कारण चोटिल होने से बच गया। जब हमें समझ आया तो देखा कि हमारी टैक्सी के पीछे चल रही गाड़ियों से लोग उतर कर हमारी ओर चिल्लाते हुए दौड़े। किसी तरह टैक्सी का दरवाजा खोलकर हम सब को बाहर निकाला गया और फिर राहत कार्य शुरू हुआ। हमारी टैक्सी के पीछे आ रही सरकारी बस में उपलब्ध first-aid box से वहां उपस्थित कुछ जिम्मेदार व्यक्तियों ने हमे प्राथमिक उपचार प्रदान करते हुए उसी बस से नैनीताल के लिए रवाना किया।

हम अपने दर्द को सहते हुए बच्चों को लगी चोट का इलाज कराने के लिए बस के कंडक्टर की सहायता से नैनीताल बस स्टैंड पर स्थित एक डॉक्टर की क्लीनिक पर गए। हम सभी अत्यधिक डर गए थे और असहनीय दर्द के कारण कराह रहे थे। हालत यह थी कि हमारे पैर और हाथ कांप रहे थे, बोलने में जबान लड़खड़ा रही थी, कुछ समझ मे नहीं आ रहा था कि आगे क्या करें।

इतना भयंकर एक्सीडेंट होने के बाद भी कोई बड़ी अनहोनी नहीं हुई। हम लोगों को सिर्फ चोटें ही लगी मानो स्वयं ही मुक्तेशर भगवान ने हम सभी की जान बचाई क्योंकि हमारे बायीं ओर खाई थी। इस घटना के बाद हमें एहसास हुआ कि यह हमारा नया जीवन है।

मेरे हनुमान जी

श्रीमती आयुषी जायसवाल
पत्नी - श्री अभिषेक कुमार जायसवाल,
संकाय सदस्य / ज्ञान केंद्र,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

संस्कृत में हनुमान नाम का अर्थ है "विकृत जबड़े वाला व्यक्ति"। इसके अलावा उन्हें कई अन्य नामों से भी जाना जाता है- जिनमें बजरंगबली, पवनपुत्र, वायुपुत्र, केसरीनंदन, रामदूत और राम भक्त शामिल हैं। हनुमान जी नायाब शारीरिक और मानसिक दृढ़ता, तेज बुद्धि, अटूट भक्ति, सरलता और सभी रूपों में पवित्रता के प्रतीक हैं। जब लोग बड़ी कठिनाई में होते हैं और उन्हें साहस और विश्वास की आवश्यकता होती है, तो वे शक्ति व साहस के लिए उनकी ओर मुड़ते हैं।

हनुमान जी को भगवान शिव का रूप कहा जाता है, जिन्हें कुछ धार्मिक ग्रंथों के अनुसार एक पूर्व निर्धारित कार्य को पूरा करने के लिए एक बंदर के रूप में पृथ्वी पर लाया गया था। हनुमान असाधारण शक्ति व बुद्धि से संपन्न थे। रामायण के महाकाव्य सुंदरकांड में उनके जीवन और कारनामों का विस्तृत विवरण है। उनके कार्यों, जीवन शैली और चरित्र से हम बहुत से सबक प्राप्त कर सकते हैं और उनका अपने जीवन में अनुसरण कर सकते हैं:-

पहला सबक:- किसी उद्देश्य के प्रति पूर्ण और अटूट प्रतिबद्धता ।

जैसा कि व्यापक रूप से जाना जाता है कि हनुमान जी पूरी तरह से भगवान राम के निःस्वार्थ भक्त थे। अधिकांश तस्वीरों में हनुमान जी को भगवान राम के चरणों में भी देखा जा सकता है। एक बार माता सीता ने हनुमान को कीमती मोतियों से जड़ा हार भेंट किया। हनुमान जी ने प्रत्येक मोती का अच्छी तरह से निरीक्षण किया और फिर हार को एक तरफ फेंक दिया, जिससे माता सीता और उपस्थित सभी लोग हैरान रह गए। हनुमान जी ने बताया कि मोती चाहे जितने भी कीमती हों उनमें भगवान राम की कोई निशानी नहीं है और ऐसी कोई भी चीज़ जो कि भगवान राम से जुड़ी ना हो वह मेरे लिए बेकार है।

सीख:- अपने उद्देश्य और अपने काम के लिए निःस्वार्थ रूप से प्रतिबद्ध रहें। आपके प्रयासों को निस्संदेह स्वीकार किया जाएगा और पुरस्कृत किया जाएगा। अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये हमेशा तत्पर रहें ।

दूसरा सबक:- कठिनाई के समय में ही वास्तविक ताकत का पता चलना।

रामायण के अनुसार रावण द्वारा माता सीता को बंधक बनाए जाने के बाद हनुमान, अंगद, जामवंत और अन्य वानर वंश के सदस्य दक्षिण में उनका पीछा करने के लिए रवाना हुए। वे पूरे दिन व रात, रेगिस्तानों और पहाड़ों पर, जंगलों और घाटियों पर देखते रहे, वे निराश थे कि वे माता सीता को नहीं पा सके और खाली हाथ वापस नहीं जाना चाहते थे। लेकिन कुछ ही समय बाद उन्हें पता चला कि माता सीता को रावण लंका ले गया है। माता सीता के बारे में पता चलने पर सभी वानर और जामवंत जी बहुत हर्षित हुए। लेकिन उनकी खुशी क्षणभंगुर थी। लंका का साम्राज्य समुद्र के उस पार स्थित था। उनके पास लंका जाने के लिए भौतिक साधनों का अभाव था। जामवंत जी को अचानक याद आया कि हनुमान में अलौकिक शक्ति है और वे अपने आकार का विस्तार करके आसानी से लंका तक छलांग लगा सकते हैं, परन्तु एक ऋषि द्वारा हनुमान जी को बचपन में दिए गए श्राप के कारण हनुमान जी अपनी इन अपार

प्रतिभाओं से अनजान थे। जामवंत जी ने उन्हें देवताओं से प्राप्त आशीर्वाद की याद दिलाई और उन्हें लंका में असाधारण छलांग लगाने के लिए कहा। हनुमान जी पहले तो हिचकिचाए, लेकिन जब उन्होंने देखा कि लंका जाने का यही एकमात्र रास्ता है तो वे सहमत हो गए और इस तरह से उन्हें पता चला कि वे अपने शरीर को विशाल आयामों तक बढ़ा सकते हैं और उन्होंने लंका में छलांग लगा दी।

सीख:- हम सभी के पास छिपी हुई अद्भुत क्षमताएं हैं। मनुष्य में समस्याओं से दूर रहने और अपने सुविधा क्षेत्र में रहने की प्रवृत्ति होती है, जो कि मनुष्य को इन शक्तियों का उपयोग करने से रोकती है। हम अपनी पूरी शक्ति और क्षमता को तभी पहचानते हैं जब हमारे सामने कोई कठिनाई आती है। सच तो यह है कि अगर हमारे पास कोशिश करते रहने का धैर्य और बहादुरी है, तो हम आश्चर्यजनक चीजें करने में सक्षम हैं। मनुष्य को हार नहीं माननी चाहिए। परमेश्वर सदा ही मनुष्य की परीक्षा लेता है ताकि हम अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करते हुए अपनी आंतरिक शक्तियों का पता लगा सकें।

तीसरा सबक:- हमेशा सकारात्मक लोगों की संगति अपनायें।

एक व्यक्ति की पहचान उसकी संगति से होती है । हनुमान जी को बुद्धिमान और सक्षम सहयोगियों से घिरे रहने का उत्कृष्ट सौभाग्य प्राप्त था।

सीख:- जिस तरह से जामवंतजी ने हनुमान जी को प्रेरित किया और उन्हें अपनी शक्तियों की याद दिलाई। आपको सच्चे दोस्तों और शुभचिंतकों की आवश्यकता होगी जो मुश्किल समय में आपका समर्थन करेंगे और आपको ऊपर उठाएंगे। आपकी ताकत का स्रोत आपके सच्चे दोस्त हैं। वे हमेशा आपके हित को ध्यान में रखेंगे और मुश्किल समय में आपका समर्थन करेंगे। झूठे और चापलूस दोस्त कठिन परिस्थितियाँ आने पर आपको छोड़ने में संकोच नहीं करेंगे क्योंकि वे केवल अपने स्वार्थ के लिए आपका साथ चाहते हैं।

चौथा सबक:- आवश्यकतानुसार अपने दृष्टिकोण और व्यवहार को संशोधित करें।

जब हनुमान जी को लंका तक लंबी छलांग लगाने की जरूरत पड़ी तो उन्होंने अपने आप को विशाल रूप में बदल लिया। लंका पहुंचने के उपरांत उन्हें माता सीता की तलाश करनी थी। किसी का ध्यान उन पर न जाये इसलिए उन्होंने खुद को सूक्ष्म (मच्छर) रूप में परिवर्तित कर लिया।

सीता जी से मिलने के बाद वे अपने सामान्य रूप में वापस आ गए। जब रावण के सैनिकों ने हनुमान जी को देखा तो उनके और सैनिकों के बीच भयंकर युद्ध हुआ। परेशान करने वाले बंदर को नियंत्रित करने के अंतिम प्रयास में, रावण ने अपने पुत्र मेघनाथ (इंद्रजीत) को ब्रह्मांड के सबसे शक्तिशाली हथियार 'ब्रह्मास्त्र' को चलाने की आज्ञा दी, जिसे स्वयं भगवान ब्रह्माजी ने बनाया था। मेघनाथ ने हामी भरी और ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया। हनुमान जी को स्वयं भगवान ब्रह्मा द्वारा ब्रह्मांड के किसी भी अस्त्र से प्रतिरक्षित होने का वरदान प्राप्त था। हनुमान जी चाहते तो उस वरदान की सहायता से ब्रह्मास्त्र को भी काट सकते थे परन्तु इससे ब्रह्मा जी का अपमान होता क्योंकि ब्रह्मास्त्र तो भगवान ब्रह्माजी ने बनाया था। इसलिए उन्होंने ब्रह्मास्त्र को विनम्रता के साथ स्वयं पर विजय प्राप्त करने की अनुमति दी। ब्रह्मास्त्र द्वारा स्वयं को कैद करवाने के उपरांत उन्हें रावण के सामने पेश किया गया। हनुमानजी ने अपने कर्मों के लिए न तो खेद व्यक्त किया और न ही वह रावण से भयभीत हुए। इससे रावण क्रोधित हो गया और उसने उस वानर की पूँछ को जलाने का आदेश दिया। हनुमान जी का अग्नि से प्रतिरोध एक ऐसा तथ्य था जिससे रावण अनजान था। हनुमान जी ने भी इसके बारे में चुप रहना ही पसंद किया। रावण और उसके सैनिकों का इरादा पूरी लंका में जनता के सामने हनुमान जी की परेड कराने का था। हनुमान जी ने भी इसमे सहयोग करने का निर्णय लिया क्योंकि वह पूरे शहर का ख़ाका अपने दिमाग में खींचना चाहते थे जो बाद में लंका के साथ बड़ी लड़ाई के दौरान सहायक होगा।

स्वाभाविक रूप से रावण को पता ही नहीं था कि हनुमान क्या कर रहे थे और उन्हें विश्वास था कि वे जीत गए हैं। जब हनुमान जी ने अपनी पूँछ से पूरी लंका को जला दिया एवं पूरी लंका को अच्छी तरह से भांप लिया, उसके उपरांत हनुमान जी स्वयं ही अपने बंधनों से मुक्त हो गए।

सीख:- यह हमें स्थिति के अनुसार कार्य करना और अपनी क्षमताओं के बारे में सार्वजनिक रूप से शेखी बघारने से बचना सिखाता है। यह जानना कि कब अपनी वास्तविक शक्ति का प्रदर्शन करना है और कब उसे छुपाना है, यह ज्ञान की निशानी है। ताकत का अत्यधिक प्रदर्शन, विशेष रूप से उन लोगों के प्रति जो असहाय हैं, अनुचित है। दूसरी तरफ, विनम्रता एक ऐसा गुण है जो दूसरों का सम्मान और विश्वास हासिल करने में मदद करता है। लेकिन जब समय की मांग हो तो अपनी असली ताकत दिखाने से डरना भी नहीं चाहिए।

पांचवां सबक:- हमेशा अपनी इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखें।

हनुमान जी ने अपना पूरा जीवन एक ब्रह्मचारी के रूप में जिया, जिनका अपनी इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण था। उन्होंने अपनी शक्तियों का प्रयोग हमेशा दूसरों के लाभ के लिए ही किया और कभी भी अपने स्वार्थ के लिए नहीं। उन्होंने कभी भी प्रत्यक्ष आत्म-गौरव या प्रभुत्व, धन या शक्ति की इच्छा का प्रदर्शन नहीं किया। अत्यधिक दबाव में भी, उन्होंने शायद ही कभी भावनाओं या क्रोध को अपने निर्णय पर हावी होने दिया और सावधानीपूर्वक, तर्कपूर्ण निर्णय लिए। उन्होंने सभी के साथ अत्यंत सम्मान के साथ व्यवहार किया, विशेषकर महिलाओं के साथ। परिणामस्वरूप, उन्होंने भगवान राम सहित सभी का सम्मान और आदर प्राप्त किया।

सीख:- अपने सभी विचारों, भावनाओं, इच्छाओं और वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखने का लक्ष्य रखें। स्वार्थी व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति पर आसानी से प्रभाव डाल सकते हैं और उस पर हावी हो सकते हैं, जिसमें अपने स्वयं के स्वार्थों के लिए आत्म-नियंत्रण की कमी होती है। एक व्यक्ति जो संयम बनाए रखने की कोशिश करता है, वह जल्दबाज़ी में ऐसे मूर्खतापूर्ण फैसले नहीं करता, जिस पर बाद में उसे पछतावा हो। ऐसे व्यक्ति अपने आसपास के लोगों से प्रशंसा और सम्मान भी प्राप्त करते है। लोग आपका सम्मान तभी करेंगे जब आप बदले में उनका सम्मान करेंगे।

छठा सबक:- कठिनाइयों को हल करने के लिए, नए और असामान्य दृष्टिकोणों पर विचार करें।

लंका में मेघनाथ से युद्ध करते समय लक्ष्मण जी गंभीर रूप से घायल हो गए थे। हनुमान जी को लक्ष्मण जी के जीवन को बचाने के लिए अनमोल संजीवनी बूटी की तलाश में हिमालय पर्वत पर जाना था। वह तेजी से आगे बढ़े। जब वह पहाड़ पर पहुंचे, तो उन्होंने महसूस किया कि वह जल्दबाज़ी में यह पूछना भूल गए कि संजीवनी बूटी कैसी दिखती है। पूछताछ के लिए वापस उड़ान भरना समय की बर्बादी होगी। लक्ष्मण जी का जीवन एक धागे पर लटका हुआ था, और प्रत्येक गुजरता हुआ छड़ उन्हें मृत्यु के एक कदम और करीब ला रहा था। इसलिए उन्होंने तुरंत आगे बढ़ने का फैसला किया और पूरे पहाड़ को उखाड़ कर लंका ले आये जिससे लक्ष्मण जी की जान बच सकी।

सीख:- कठिनाइयों के वैकल्पिक समाधानों पर विचार करने से न डरें, चाहे वे कितने भी हास्यास्पद या असंभव क्यों न लगें। जब आपके सामने एक कठिन परिदृश्य प्रस्तुत किया जाता है तब मौलिक और कल्पनाशील होने से आपको भीड़ से अलग दिखने में मदद मिलेगी। यदि कोई तरीका कार्य को पूरा करने में असरदार है, तो वह तरीका सार्थक है।

सातवां सबक:- केवल दूसरों के लिए जीने का प्रयास करें।

हनुमान जी और रावण, दोनों के पास अलौकिक शारीरिक और मानसिक क्षमताएं थी। दोनों ने भगवान ब्रह्मा से आशीर्वाद प्राप्त किया था जिसने उन्हें अजेय बना दिया था। लेकिन दोनों के स्वभाव बहुत अलग थे। रावण ने अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों का पीछा करने के लिए अपनी क्षमताओं का उपयोग किया। लालच और सत्ता की बढ़ती भूख रावण की आत्मा पर हावी होती गई और अंततः उसके निधन का कारण बनी।

दूसरी तरफ हनुमान जी ने अपना पूरा जीवन भगवान राम की सेवा में समर्पित कर दिया। अपार प्रतिभाओं के बावजूद उन्हें विलासिता की वस्तुओं या सांसारिक सुख-संपत्ति की कोई इच्छा नहीं थी।

सीख:- हमारे पास जीवनयापन के दो तरीके मौजूद हैं: या तो हम जीवन भर अपनी स्वार्थी महत्वाकांक्षाओं का पीछा करते रहें या फिर दूसरों की मदद करते हुए जीवनयापन करें। एक दिन हमारी आत्मा दौलत और ताकत की हमारी लगातार खोज से दूर हो जाएगी, जो हमारी मृत्यु का कारण बनेगी। हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें समृद्धि की अपनी खोज को छोड़ देना चाहिए। हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी उचित साधनों का उपयोग करना चाहिए। हमें सही मार्ग का अनुसरण करते हुए, नैतिक रूप से कार्य करते हुए, और दूसरों की मदद करते हुए जीवनयापन करने का प्रयास करना चाहिए। इससे हर कोई आपकी प्रशंसा व अनुकरण करेगा और कोई भी आपकी प्रसिद्धि और धन का शोक नहीं मनाएगा।

निष्कर्ष: - हनुमान जी के जीवन से बहुत से सबक सीखे जा सकते हैं। वैसे तो किसी भी नश्वर मनुष्य के लिए उनके जैसा हो पाना असंभव है, फिर भी हमें अपने दैनिक जीवन में उनके कार्यों का अनुकरण करने का प्रयास करना चाहिए। हम स्थायी शांति, सम्मान और खुशी तभी प्राप्त कर सकते हैं जब हम परिपूर्ण जीवन जीएंगे।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।
-पं. कमलापति त्रिपाठी

ज्योतिर्लिंग- अद्भुत प्रकाश स्तम्भ

श्री विनय सिंह
पति- श्रीमती मोनिका चौहान,
कनिष्ठ अनुवादक,
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

भारत एक ऐसा देश है जहां के लोग अध्यात्म में आस्था रखते हैं। भारत मंदिरों की भूमि है यहाँ ऐसे कई विशेष धाम है जहाँ हमेशा भक्तों का तांता लगा रहता है । हिन्दू धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान शंकर यानि शिव जी ने जिन स्थान पर स्वयं शिव-लिंग के रूप में प्रकट होकर अपनी ज्योति विद्यमान की, उन्हीं शिव-लिंग को ज्योतिर्लिंग के नाम से जाना गया। इन ज्योतिर्लिंग की कुल संख्या 12 है, जो पूरे देश में 12 अलग-अलग जगहों पर मौजूद हैं ।

ज्योतिर्लिंग का अर्थ - ज्योतिर्लिंग का अर्थ प्रकाश-स्तंभ होता है। ज्योतिर्लिंग स्वयंभू होते हैं, यानि कि ज्योतिर्लिंग स्वयं से प्रकट होते हैं। वैसे तो ज्योतिर्लिंग की उत्पत्ति को लेकर कई मान्यताएं प्रचलित हैं, लेकिन लिंगमहापुराण के अनुसार, एक बार भगवान ब्रह्मा और विष्णु के बीच श्रेष्ठता का विवाद हो गया। जब उनका विवाद बहुत अधिक बढ़ गया, तब अग्नि की ज्वालाओं के लिपटा हुआ लिंग भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु के बीच आकर स्थापित हुआ था, दोनों उस लिंग का रहस्य नहीं समझ पाए। इस रहस्य के बारे में विष्णु भगवान और ब्रह्मदेव ने हजार वर्षों तक खोज की फिर भी उन्हें उस लिंग का स्त्रोत नहीं मिला। निराश होकर दोनों देव फिर से वहीं आ गए जहां उन्होंने लिंग को देखा था। वहां आने पर उन्हें ओम की ध्वनि सुनाई दी, जिसको सुनकर उन्हें अनुभव हुआ कि यह कोई शक्ति है और उस ओम के स्वर की आराधना करने लगे। भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु की आराधना से प्रसन्न होकर उस लिंग से भगवान शिव प्रकट हुए और सदबुद्धि का वरदान दिया। देवों को वरदान देकर भगवान शिव ने प्रकाश स्तंभ को पृथ्वी पर गिरा दिया और आज उसे ही ज्योतिर्लिंग के नाम से जाना जाता है।

शिव पुराण के अनुसार उस समय आकाश से ज्योति पिंड पृथ्वी पर गिरें और उनसे पूरी पृथ्वी पर प्रकाश फैल गया था और इन्ही पिंडों को ज्योतिर्लिंग का नाम दे दिया गया है। ऐसा माना जाता है कुछ ज्योतिर्लिंग बाद में प्रकट हुए, जहां-जहां भगवान शिव प्रकट हुए, वहां ज्योतिर्लिंग बन गए। इनकी कुल संख्या 12 है। भगवान शिव के भक्तों के लिए 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करना किसी स्वप्न से कम नहीं है। । ये 12 ज्योतिर्लिंग भारत में उत्तर के हिमालय से लेकर दक्षिण के रामेश्वरम तक अलग-अलग जगहों पर स्थित है। इन ज्योतिर्लिंगों से संबंधित एक श्लोक भी प्रचलित है, जिसमें सभी का वर्णन है –

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारम् ममलेश्वरम्॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे।

हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरेण विनश्यति॥
। इत द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तुति संपूर्णम् ।

1. सोमनाथ ज्योतिर्लिंग - सोमनाथ ज्योतिर्लिंग गुजरात के सौराष्ट्र नामक क्षेत्र में स्थित है । यह पृथ्वी पर प्रकट होने वाला पहला ज्योतिर्लिंग माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि सबसे पहले इस ज्योतिर्लिंग के मंदिर का निर्माण चंद्रदेव ने करवाया था। भगवान चन्द्रदेव को सोमदेव के नाम से भी जाना जाता है इसलिए इसका नाम सोमनाथ पड़ा । पुराणों के अनुसार इस मंदिर का सुनहरा भाग चंद्रदेव ने और चांदी का भाग सूर्यदेव ने बनावाया था।

देवताओं ने यहाँ पर पवित्र कुंड बनाया था जिसे सोमनाथ कुंड कहा जाता है। इस कुंड में स्नान करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और वह जन्म - मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त करता है। सोमनाथ ज्योतिर्लिंग का उल्लेख ऋग्वेद, शिव पुराण, स्कंद पुराण, श्रीमद भगवत गीता में भी मिलता है और इसी से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह मंदिर कितना पुराना हो सकता है। इस मंदिर पर महमूद गजनबी ने तकरीबन 16 बार आक्रमण किया और 16 बार इसे खंडित किया। किंतु इसे फिर से 16 बार वापस खड़ा किया गया। इसे शाश्वत तीर्थ भी कहा जाता है, ऐसा माना जाता है कि यह वह स्थान है जहां भगवान कृष्ण ने अपनी लीला समाप्त की थी और उसके बाद स्वर्ग में निवास किया था।

2. मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग - मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग आंध्र प्रदेश के कृष्णा नदी के किनारे श्री शैल नामक पर्वत पर स्थित है। शिवपुराण के अनुसार, मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग शिव और पार्वती का संयुक्त रूप है। मल्लिका का अर्थ है पार्वती और अर्जुन शब्द शिव का वाचक है। इस तरह से इस ज्योतिर्लिंग में भगवान शिव और माता पार्वती दोनों की ज्योतियां प्रतिष्ठित हैं।

कई राजाओं ने मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग का रखरखाव करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। लेकिन इतिहास की किताबों में जो पहला नाम मिलता है वह सातवाहन साम्राज्य का है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने भी मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के रखरखाव में अपना योगदान दिया था। मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग की एक खास बात यह भी है कि इस मंदिर के पास में एक शक्तिपीठ मंदिर भी स्थित है जो भारत में कुल 51 शक्तिपीठों में से एक है।

3. महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग - महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्यप्रदेश के उज्जैन में स्थित है। यह 12 ज्योतिर्लिंगों में एकमात्र ऐसा ज्योतिर्लिंग है जो दक्षिण मुखी है । ऐसा माना जाता है कि उज्जैन पृथ्वी एवं आकाश का केंद्र है एवं यहीं से संपूर्ण ब्रह्माण्ड का समय निर्धारण होता है । शिव समय या काल के राजा एवं मृत्यु के स्वामी होने के कारण उज्जैन में स्थापित इस ज्योतिर्लिंग को महाकालेश्वर कहा जाता है । महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग में पहले भगवान शिव की पूजा जलती हुई चिता की राख व भस्म से की जाती थी किंतु अब कुछ कारणों से कपिला गाय के गोबर के कण्डो, पीपल, पलाश, बड़, अमलताश, शमी और बेर से तैयार की गई राख से की जाती है।

पुराणों के अनुसार, श्री महाकाल सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक माना जाता है। शिवपुराण के अनुसार, श्रीकृष्ण के पालक नंद से आठ पीढ़ी पहले महाकाल यहां विराजित हुए थे। इस ज्योतिर्लिंग के बारे में वेदव्यास ने महाभारत में, कालिदास ने बाणभट्ट में भी लिखा है।

उज्जैन के महाकाल से जुड़ी जो अहम बात है वो ये कि यहां पर कोई शाही या राज पद पर विराजमान व्यक्ति रात नहीं गुजार सकता है। माना जाता है कि उज्जैन में विक्रमादित्य के बाद कोई भी राजा नहीं हुआ। माना जाता है कि उज्जैन में केवल एक ही राजा रह सकता है और महाकाल को यहां का राजा माना जाता है इसलिए कोई और राजा

यहां पर नहीं ठहर सकता है। जिस वजह से राजा भोज के काल से ही यहां पर किसी राजा ने रात नहीं गुजारी है। और इसी प्रथा को आज भी राजा, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री तक मानते है और यहां रात नहीं गुजारते है।

4. ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग – यह ज्योतिर्लिंग मध्यप्रदेश के खंडवा जिले के शिवपुरी द्वीप में स्थित है। इसे मंधाता पर्वत के नाम से भी जाना जाता है। इस ज्योतिर्लिंग के पास में नर्मदा नदी बहती है। यह इंदौर शहर से लगभग 75 किमी की दूरी पर स्थित है। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग का अर्थ होता है ओम के आकार का ज्योतिर्लिंग। इस ज्योतिर्लिंग मंदिर के चारों ओर पहाड़ है और पहाड़ के चारों और जो नदी बहती है वह ओम का आकार बनाती है इसलिए इसका नाम ओंकारेश्वर मंदिर पड़ा । यही वह स्थान है जहाँ कुबेर की तपस्या से प्रसन्न होकर शिव जी ने उन्हें धन का देवता बना दिया था ।

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग को लेकर धार्मिक मान्यता है कि बाबा भोलेनाथ यहां रात्रि में शयन के लिए आते हैं। कहा जात है कि पृथ्वी पर ये एकमात्र ऐसा मंदिर है जहां शिव-पार्वती रोज चौसर पांसे खेलते हैं। रात्रि में शयन आरती के बाद यहां प्रतिदिन चौपड़ बिछाए जाते हैं और गर्भग्रह बंद कर दिया जाता है। अगली सुबह ये पासें बिखरे हुए मिलते हैं। आश्चर्य की बात है कि जिस मंदिर के भीतर रात के समय परिंदा भी पर नहीं मार पाता है, वहां हर सुबह चौपड़ बिखरे पाए जाते हैं।

5. केदारनाथ ज्योतिर्लिंग – यह ज्योतिर्लिंग उत्तराखंड में स्थित है। केदारनाथ ज्योतिर्लिंग पूरे विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय ज्योतिर्लिंग है । चूंकि यह केदार पर्वत पर स्थित है अतः इसे केदारनाथ ज्योतिर्लिंग के नाम से जाना जाता है। केदारनाथ ज्योतिर्लिंग समुद्र तल से तकरीबन 3584 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। ऐसा भी माना जाता है कि केदारनाथ धाम की खोज पांडवों ने की थी । वें अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए केदारनाथ धाम पहुंचे थे। केदारनाथ मंदिर का निर्माण पांडवों ने ही सबसे पहले करवाया था। इसके बाद इसका पुनर्निर्माण आदिशंकराचार्य जी ने करवाया था। ऐसा कहा जाता है कि केदारनाथ में मौजूद ज्योतिर्लिंग आधी है और इसे पूर्ण बनाती है नेपाल स्थित पशुपतिनाथ मंदिर की शिविलिंग। भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग का यह धाम अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। यहाँ स्थित ज्योतिर्लिंग का आकार त्रिकोणाकार है ।

इस मंदिर का सबसे बड़ा रहस्य यह है कि दीपावली के दूसरे दिन शीत ऋतु में यह मंदिर आगामी 6 माह के लिए बंद कर दिया जाता है और बंद करते समय मंदिर के अंदर महादेव के समक्ष एक दिया जलाया जाता है । छः माह के बाद जब मंदिर के कपाट खोले जाते हैं तब भी यह दीपक जलते हुए ही पाया जाता है ।

6. भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग - भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के पुणे में स्थित है। महाराष्ट्र के सह्याद्री नामक पर्वत पर भीमा नदी के किनारे स्थित है। भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग के बारे में आपको एक कथा बताते हैं जो रामायण काल से जुड़ी हुई है। जब भगवान राम ने कुंभकरण का वध कर दिया था तब कुंभकरण की पत्नी कर्कटी ने उनके पुत्र भीमा को देवताओं से दूर रखने का निश्चय किया।

जब भीमा को पता चला कि देवताओं ने उसके पिता का वध कर दिया तो उसने बदला लेने के लिए ब्रह्मा जी की तपस्या की और महान बलशाली होने का वरदान मांगा। इसी कारण उन्होंने कामरूपेक्ष्प नामक राजा को बंदी बनाकर काल कोठरी में डाल दिया क्योंकि वह शिव जी के भक्त थे।

भीमा ने कहा कि तुम मेरी पूजा करो, लेकिन कामरूपेक्ष्प ने एसा करने से मना कर दिया और भीमा ने कामरूपेक्ष्प को मारने की कोशिश की । तभी भगवान शिव ने वहां प्रकट होकर भीमा को अपनी हुंकार मात्र से जलाकर भस्म कर दिया तभी देवताओं ने भगवान शिव से प्रार्थना की कि वे वहीं अपने ज्योतिर्लिंग के रूप में निवास करें। तब से इस ज्योतिर्लिंग का नाम भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग पड़ गया।

7. काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग – काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में स्थित है। वाराणसी पूरे भारत की धार्मिक राजधानी मानी जाती है। यह मान्यता है कि जब पृथ्वी बनी थी तब सूर्य की पहली किरण काशी पर ही गिरी थी। ऐसा भी माना जाता है कि काशी नगरी शिव जी के त्रिशूल पर बसी है और इसलिए यह मोक्ष प्राप्ति का सर्वोचित स्थान है ।

महादेव स्वयं यहाँ विराजमान हैं इसलिए जहाँ संपूर्ण विश्व में मृत्यु को शोक समझा जाता है, यहाँ मृत्यु एक उत्सव है । इसका उदाहरण काशी के मणिकर्णिका घाट पर देखने को मिल जाएगा । इस जगह पर माता सती के कान की मणि गिरी थी । दशाश्वमेध घाट के किनारे बसा हुआ यह मंदिर और इसका भव्य नजारा किसी स्वर्ग से कम नहीं है।

8. त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग - त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के नासिक जिले में है। त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग ब्रम्हगिरी पर्वत पर स्थित है, जहाँ से गोदावरी नदी शुरू होती है। त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग को इस नाम से इसलिए जाना जाता है क्योंकि इस ज्योतिर्लिंग के तीन मुख हैं, जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु और शिव का प्रतीक माना जाता है।

त्र्यंबकेश्वर शिवलिंग की एक विशेषता यह भी है कि यह आकार में काफी छोटा है जिसकी वजह से भक्तजनों को प्रवेश नहीं दिया जाता है । शिवलिंग के ऊपर एक शीशा लगा हुआ है जिससे भगवान के दर्शन करने होते हैं । मंदिर के समीप एक कुंड बना हुआ है और लोगों का मानना यह भी है कि कुंड में स्नान करने के बाद अगर कोई शिवलिंग के दर्शन करें तो उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती है ।

9. वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग - वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग झारखंड राज्य के संथाल परगना के पास स्थित है। शिवपुराण में हुए वर्णन के अनुसार इसे भगवान शिव के इस पावन धाम को चिता भूमि कहा जाता है। भगवान वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग को रावण की भक्ति का प्रतीक भी माना जाता है और यह ज्योतिर्लिंग अपने भक्तों की कामनाओं को पूरा करने और उन्हें रोग मुक्त बनाने के लिए प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि एक बार रावण भगवान शिव का ज्योतिर्लिंग लेकर इसी मार्ग से जा रहा था लेकिन रास्ते में ही उसे लघुशंका लग गई जिसके कारण उसने वह शिवलिंग एक ग्वाले के हाथ में थमा दिया जिसने भारी-भरकम भार वहन से थक कर उस शिवलिंग को वहीं जमीन पर रख दिया और भगवान शिव यहां स्थापित हो गए।

कहा जाता है कि एक बैजू नाम के ग्वाले की गाय रोजाना वहां घास चढ़ते हुए अपना दूध भगवान शिव को समर्पित कर देती थी। उसी ग्वाले के नाम पर यहां स्थित भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग का नाम बैजनाथ धाम पड़ा।

10. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग - नागेश्वर ज्योतिर्लिंग गुजरात के बड़ौदा क्षेत्र के गोमती द्वारका के निकट स्थित है। यह द्वारकापुरी से तकरीबन 17 किमी दूर है। नागेश्वर ज्योतिर्लिंग में भगवान शिव की 80 फीट ऊंची एक मूर्ति है। नागेश्वर अर्थात नागों का ईश्वर - वासुकी जो भगवान शिव जी के गले में कुंडली मार कर बैठे रहते है। यह ज्योतिर्लिंग उनको समर्पित है । कहा जाता है कि इस मंदिर में ज्योतिर्लिंग के दर्शन से विष संबंधित सभी रोगों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

कहा जाता है कि दारुका नामक राक्षस ने सुप्रिय नामक शिव भक्त को कैद कर लिया था । सुप्रिय द्वारा 'ओम नमः शिवाय' के जाप ने भगवान शिव का आह्वान किया, जिन्होंने यहां आकर राक्षस को हराया। यहां एक स्वयंभू शिवलिंग प्रकट हुआ था और आज भी इसकी पूजा की जाती है।

11. रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग - रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में स्थित है। रामसेतु भी वही स्थित है। यह चार धामों में से एक है । रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग रामायण के काल जितना पुराना माना जाता है। यह भी माना जाता है कि आज के समय जो रामेश्वरम मंदिर में 24 पानी के कुए हैं वह खुद भगवान श्रीराम ने अपने तीरों से बनाए थे ताकि वे अपने वानर सेना की प्यास बुझा सके। रामेश्वरम मंदिर के पास ही भगवान राम और विभीषण की पहली बार मुलाकात हुई थी। और ऐसा भी माना जाता है कि रावण को मारने के लिए जो ब्रह्म हत्या का पाप भगवान

राम को लगा था उसके दोष से मुक्त होने के लिए भगवान राम ने यहीं भगवान शिव की आराधना की थी। चूंकि यह ज्योतिर्लिंग भगवान राम के आह्वान द्वारा स्थापित हुए थे इसलिए इसे रामेश्वरम कहा जाता है।

रामेश्वरम मंदिर का गलियारा विश्व का सबसे लंबा गलियारा है, यह उत्तर से दक्षिण में 197 मीटर और पूर्व पश्चिम में 133 मीटर लंबा है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार यहां कुंड में स्नान के बाद पापों से मुक्ति मिल जाती है। कहते हैं यहां मौजूद 24 कुंड का पानी इतना गुणकारी है कि इसमें डुबकी लगाने के बाद गंभीर बीमारी भी खत्म हो जाती है।

12. घृष्णेश्वर / घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग - घृष्णेश्वर / घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के संभाजी नगर के पास दौलताबाद में स्थित है। इसे भगवान शिवालय भी कहा जाता है क्योंकि यह अंतिम और बाहरवा ज्योतिर्लिंग है।

यह ज्योतिर्लिंग घुश्मा के मृत पुत्र को जीवित करने के लिए भगवान शिव के समर्पण में बनाया गया है। और तभी से यह घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज इस ज्योतिर्लिंग को घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग के प्रसिद्ध नाम से भी जाना जाता है। 240 फीट x 185 फीट का यह मंदिर भारत का सबसे छोटा ज्योतिर्लिंग मंदिर है। मंदिर के आधे भाग में, विष्णु के दशावतार लाल पत्थर में उकेरे गए हैं। एक कोर्ट हॉल 24 स्तंभों पर बनाया गया है।

प्राय: लोग यह सोचते हैं कि ज्योतिर्लिंग और शिवलिंग दोनों एक होते हैं तथा इन में कोई अंतर नहीं होता। लेकिन वास्तविकता में ऐसा नहीं है, ज्योतिर्लिंग और शिवलिंग दोनों अलग-अलग हैं तथा अपनी विशेष भूमिका रखते हैं। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग स्वयंभू हैं अर्थात वह ज्योति स्वरूप में स्वयं प्रकट हुए हैं जबकि शिवलिंग प्राय: मानव द्वारा भगवान शिव की आराधना के लिए निर्मित किए जाते हैं हालांकि कुछ शिवलिंग स्वयंभू भी हो सकते हैं जिन की स्थापना मंदिरों में की जाती है या उसी स्थान पर मंदिर बना दिए जाते हैं। हालांकि भले ही शिवलिंग मानव निर्मित और स्वयंभू दोनों होता है लेकिन ज्योतिर्लिंग सदैव भगवान शिव की कृपा से स्वयं ही ज्योति स्वरूप में उत्पन्न होता है। शिवलिंग की संख्या संसार में न जाने कितनी होगी, लेकिन शिव के केवल 12 ज्योतिर्लिंग है ।

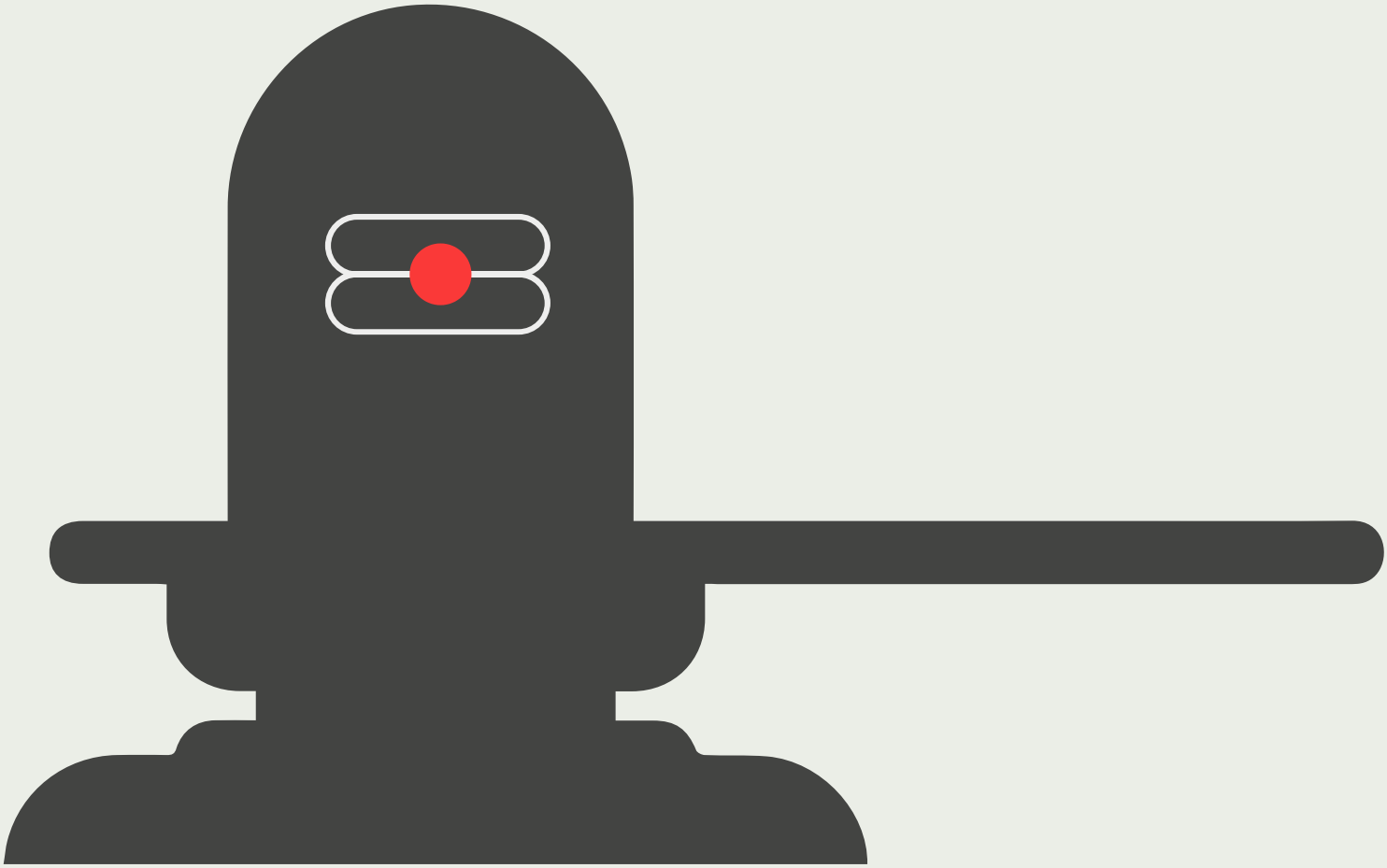

प्रसाददानं श्रीकृष्णस्य कार्यम्

श्री राहुल, कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार लेखा व हकदारी,
जम्मू कश्मीर, श्रीनगर

भारतवर्ष के सबसे भीषण धर्म युद्ध के लिए रणभूमि सज चुकी थी। एक से बढ़ कर एक महावीर अपनी-अपनी सेनाएं लिए युद्ध के लिए कुरूक्षेत्र की ओर बढ़ रहे थे। कुरुक्षेत्र की ओर बढ़ने वाले मार्गों पर अनगिनत सैनिक और महान गणराज्यों का प्रतिनिधत्व करने वाली पताकाएं लहरा रहीं थी। कुरुक्षेत्र जाने वाले मार्ग रथों और मद मस्त हाथियों की पदचापों से कंपित हो रहे थे। संधि के सारे मार्ग दुर्योधन की युद्ध लालसा ने बंद कर दिए थे और युद्ध ही एक मात्र विकल्प रह गया था। इस धर्म युद्ध में कोई तटस्थ नहीं रह सकता था, या तो वह धर्मराज युधिष्ठिर के ध्वज तले युद्ध करेगा अथवा दुर्योधन के। युद्ध में वे भी भाग ले रहे थे जो युद्ध का परिणाम जानते थे और वे भी जो इससे अनभिज्ञ थे। यहां तक कि योग पुरुष भगवान श्री कृष्ण भी अब निष्पक्ष नहीं थे। रथों के पहियों की भीषण गड़गड़ाहट, अश्वों के टापों,और वीर सैनिकों के कोलाहल के बीच जहां केवल जय और पराजय के विषय में ही चर्चा हो रही थी वहीं एक महारथी ऐसे भी थे जिनके मन में कुछ और ही विचार चल रहा था। वे दूरदर्शी राजा थे महाबली उडूपी नरेश। महाबली उडुपी नरेश भी अन्य महारथियों की भांति अपनी चतुरंगिनी सेना के साथ इसी युद्ध के लिए कुरूक्षेत्र पहुंच चुके थे। युधिष्ठिर और दुर्योधन दोनों ही उन्हें अपनी ओर से युद्ध करने हेतु निमंत्रित कर रहे थे। उन्होंने स्थिति को गंभीर होते देख कर कहा कि, “आप दोनों एक ही कुल में जन्मे हैं और भविष्य में यदि आप दोनों ही जीवित रहते हैं तो भारत भूमि को अपने प्रताप से और अधिक प्रकाशित करेंगे, परन्तु आप दोनों ही के लिए युद्ध अंतिम विकल्प है तो इस संबंध मे मैं मधुसूदन से वार्ता करना चाहता हूं।

थोड़े समय बाद उडुपी नरेश भगवान श्री कृष्ण के सामने उपस्थित हुए और सामान्य शिष्टाचार के उपरांत उन्होंने कहा," हे मधुसूदन इस विराट युद्ध में पितामह भीष्म, गुरू द्रोण, अंगराज कर्ण जैसे महान महारथी भाग ले रहें हैं। प्रभू मैं कायर नहीं हूँ परंतु भाइयों के बीच उपजे इस युद्ध को मैं उचित नहीं मानता, लेकिन इस युद्ध में तटस्थ भी नहीं रहा जा सकता केवल इसी कारण से मैं इस युद्ध में उपस्थित हूं। मैं युद्ध में भाग तो लेना चाहता हूं परंतु अकारण किसी के प्राण भी नहीं लेना चाहता। हे भगवान श्री कृष्ण, युद्ध में सभी जय पराजय, धर्म अधर्म को लेकर चिंतित हैं लेकिन मुझे यह चिंता है कि इस विराट युद्ध में जिसमें पचास लाख से अधिक की सेनाएं भाग ले रही हैं, इनके भोजन की व्यवस्था किसके पास होगी ? पाककला में निपुण भीम और व्यवस्था में कुशल आप स्वयं इस युद्ध में भाग ले रहे हैं, आप दोनों के अतिरिक्त ऐसा कौन है जो इस व्यवस्था का प्रतिपादन कर सकता है?” इस संबंध में मेरा मार्गदर्शन करिये।

भगवान श्री कृष्ण उडुपी नरेश की बात सुनकर मुस्कुराए ओर बोले, उडुपी नरेश तुमने जन कल्याण की भावना को इस युद्ध काल में भी त्यागा नहीं है, श्री बलराम और रुक्मणि की भांति आप भी इस युद्ध में भाग नहीं लेंगे। आप से मैं आग्रह करता हूं कि आप इस युद्ध में पक्ष और विपक्ष दोनों ही के लिए भोजन की व्यवस्था को देखें। इस धर्म युद्ध में आप जैसा कुशल और जन कल्याण की भावना रखने वाला राजा ही इस व्यवस्था का निर्वहन कर सकता है।

भगवान श्री कृष्ण की बात सुनकर उडुपी नरेश को अशेष प्रसन्नता का अनुभव हुआ और भगवान श्री कृष्ण से आशीर्वाद प्राप्त कर उन्होंने अपनी सेना को भोजन की व्यवस्था में लगा दिया और प्रबंधन का कार्य स्वयं करने लगे। चमत्कारिक रूप से भोजन की व्यवस्था होने लगी और अनोखी बात यह थी कि युद्ध में भाग लेने वाले अंतिम व्यक्ति के भोजन के उपरांत भोजन समाप्त हो जाता था। ना कभी भोजन कम पड़ता न अधिक। अन्न का एक दाना भी व्यर्थ नहीं होता था। धीरे-धीरे अनेक योद्धा वीरगति को प्राप्त होने लगे, सैनिकों की संख्या कम होती रही पर पहले दिन ही की तरह अंतिम योद्धा के भोजन उपरांत भोजन समाप्त हो जाता था। कभी कोई भूखा नहीं रहा और ना ही कभी भोजन अधिक होने के कारण बासी हुआ। दोनों ओर के योद्धा यह देख कर आश्चर्यचकित रह जाते थे कि हर दिन के अंत तक उडुपी नरेश केवल उतने ही लोगों का भोजन बनवाते थे जितने वास्तव में उपस्थित रहते थे।

किसी को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर उन्हें ये कैसे पता चल जाता है कि आज कितने योद्धा मृत्यु को प्राप्त होंगे ताकि उस आधार पर वे भोजन की व्यवस्था करवा सकें। इतने विशाल सेना के भोजन का प्रबंध करना अपने आप में ही एक आश्चर्य था और उस पर भी अन्न का एक दाना भी बर्बाद ना हो, ये तो किसी चमत्कार से कम नहीं था। दिन बीतते रहे और युद्ध का निर्णय सबके सामने आया, युधिष्ठिर विजयी हुये। युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के दिन युधिष्ठिर से रहा नहीं गया और उन्होने उडुपी नरेश से भोजन के इस रहस्य को पूछा और कहा हे उडूपी नरेश सम्पूण धरा पर आज केवल हमारी ही चर्चा हो रही है, सभी इस बात की प्रशंसा कर रहे कि पांडवों ने किस प्रकार अविचल सिंधु कि भांति कौरवों की विशाल सेना को पराजित किया। परंतु मेरे लिए इससे बड़ी प्रसन्नता और आश्चर्य का विषय यह है कि किस प्रकार आपने इस विराट युद्ध में भोजन के प्रबंधन को प्रतिपादित किया ? उत्तर में उडुपी नरेश बोले, “हे धर्मराज युधिष्ठिर, आप अपने इस धर्म युद्ध की विजय का श्रेय किसको देते है ? इसके उत्तर में युधिष्ठिर बोले, इस विजय का श्रेय निसंकोच भगवान श्री कृष्ण को जाता है, यदि वह न होते तो उस युद्ध को भला कैसे जीता जा सकता है जिसका नेतृत्व स्वयं पितामह भीष्म और आचार्य द्रोण जैसे योद्धा कर रहे हों। उडुपी नरेश ने उत्तर दिया कि, हे राजन, जैसे आप इस युद्ध में भगवान श्री कृष्ण के आशीर्वाद से ही विजयी हुए हैं उसी प्रकार से इस विराट व्यवस्था का संचालन भी भगवान श्री कृष्ण के आशीर्वाद से ही किया जा रहा था। तद्उपरांत उन्होंने उस रहस्य को सबके सामने उजागर किया जिसे उनके और भगवान श्री कृष्ण के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। उन्होंने कहा, श्री कृष्ण ने युद्ध से पूर्व मुझे यह आदेश दिया था कि वे प्रत्येक रात्रि में मूँगफली खाएंगे जिसका प्रबंध का दायित्व भी उन्होने मुझे ही सौंपा।

मैं प्रतिदिन उनके शिविर में गिन कर मूँगफली रखता था और उनके खाने के पश्चात बची हुई मूँगफलियों को मैं गिन कर देखता था कि उन्होंने कितनी मूंगफली खायी है। वे जितनी मूँगफली खाते थे उससे ठीक 1000 गुणा सैनिक अगले दिन युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो जाते थे। अर्थात् अगर वे 40 मूँगफली खाते थे तो मैं समझ जाता था कि अगले दिन 40000 योद्धा युद्ध में मारे जाएँगे। इसी गणनानुसार मैं अगले दिन भोजन कम बनाता था। यही कारण था कि कभी भी भोजन व्यर्थ नहीं हुआ। उडुपी नरेश ने कहा “प्रसाददानं श्रीकृष्णस्य कार्यम्” अर्थात् युद्ध स्थल में भी भोजन श्री कृष्ण जी के द्वारा ही प्रदान किया जा रहा था। श्रीकृष्ण के इस चमत्कार को सुनकर सभी उनके आगे नतमस्तक हो गए।

चार धाम - भगवान के चार निवास स्थान

सुश्री पूजा चौहान,
बहन-श्रीमती मोनिका चौहान,
कनिष्ठ अनुवादक
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

हिन्दू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, जो व्यक्ति चार धामों की यात्रा करता है, उसके समस्त पाप धुल जाते है और आत्मा को जीवन-मृत्यु के बंधन से मुक्ति मिल जाती है। इन चारो धामो को तीर्थ भी कहा जाता है। ये चारो धाम चार दिशाओं मे स्थित हैं। उत्तर मे बद्रीनाथ, दक्षिण मे रामेश्वर, पूर्व मे पुरी और पश्चिम मे द्वारिका ।

प्राचीन समय से ही चारधाम तीर्थ के रूप में मान्य थे। चारो धाम चार दिशा मे स्थित करने के पीछे जो सांस्कृतिक लक्ष्य था, वह यह कि इनके दर्शन के बहाने भारत के लोग कम से कम संपूर्ण भारत का दर्शन कर सकें। वे विविधता और अनेक रंगो से भरी भारतीय संस्कृति से परिचित हों एवं वे अपने देश की सभ्यता और परंपराओं को भी जानें।

उत्पत्ति/निर्माण - चार धाम के निर्माण का श्रेय 8वीं शताब्दी के महान सुधारक और दार्शनिक आदि शंकराचार्य जी को दिया गया है। चार धामो मे से तीन स्थल बैष्णव (पुरी, द्वारका और ब्रदीनाथ) है, जबकि एक शैव (रामेश्वरम) है।

हिंदू पुराणों मे, हरि (विष्णु) और हर (शिव) से शाश्वत मित्र कहा गया है। कहा जाता है जहां भगवान विष्णु निवास करते हैं वहीं भगवान शिव भी निवास करते हैं। ये चार धाम भी इस नियम के अपवाद नही है। इसलिए, उत्तर दिशा ने केदारनाथ को बद्रीनाथ की, दक्षिण मे रंगनाथ स्वामी को रामेश्वरम की, पूर्व मे लिंगराज को जगन्नाथपुरी की और पश्चिम मे सोमनाथ को द्वारिका की जोड़ी के रूप में माना जाता है।

1. पहला धाम : बद्रीनाथ – यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। इसका निर्माण प्राचीनकाल मे किया गया था। यह उत्तराखण्ड के नर नारायण पर्वतों के बीच स्थित है। यह अलकनंदा नदी के किनारे बसा हुआ है, जो इसकी सुन्दरता को और भी बेहतरीन बनाती है। यह जगह सालभर मे ज्यादातर समय बर्फ से ढकी रहती है। मंदिर के कपाट भी एक निश्चित समय यानी अप्रैल से नवम्बर तक ही खुले रहते हैं।

बद्रीनाथ नाम की उत्पत्ति पर एक कथा भी प्रचलित है जो इस प्रकार है - नारद मुनि एक बार भगवान विष्णु के दर्शन हेतु क्षीर- सागर पधारे। जहाँ उन्होंने माता लक्ष्मी को उनके पैर दबाते हुए देखा। चकित नारद ने जब भगवान से इसके बारे मे पूछा तो भगवान विष्णु अपराध बोध से ग्रसित होकर तपस्या करने के लिए हिमाचल को चल दिए जब भगवान विष्णु योगध्यान मुद्रा मे तपस्या मे लीन थे तो बहुत अधिक हिमपात होने लगा। भगवान विष्णु हिम मे पूरी तरह डूब चुके थे ।

उनकी इस दशा को देखकर माता लक्ष्मी का हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने स्वयं भगवान विष्णु के समीप खड़े हो कर एक बद्री के वृक्ष का रूप ले लिया और समस्त हिम को अपने ऊपर सहने लगी। जब भगवान विष्णु ने अपना तप पूर्ण किया तो देखा कि लक्ष्मी जी हिम से ढकी है तो उन्होंने माता लक्ष्मी के तप को देख कर कहा, कि हे देवी! तुमने भी मेरे ही बराबर तप किया है । अतः आज से इस धाम पर मुझे तुम्हारे ही साथ पूजा जायेगा और क्योकि तुमने मेरी रक्षा बद्री वृक्ष के रूप मे की है तो आज से मुझे बद्री के नाथ - 'बद्रीनाथ के नाम से जाना जायेगा।

2. दूसरा धाम : द्वारका - यह मंदिर भगवान कृष्ण को समर्पित है। जहाँ 5000 वर्ष पहले भगवान कृष्ण मे द्वारका नगरी बसाई थी, जिस स्थान पर उनका निजी महल और हरिगृह था वहाँ आज द्वारकाधीश मंदिर है। द्वारिकाधीश

मंदिर को जगत मंदिर के रूप में जाना जाता है। यह हिंदू मंदिर भगवान श्री विष्णु के आठवें अवतार भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित है।

यह मंदिर भारत के गुजरात के द्वारका में स्थित है। मंदिर 72 स्तम्भों द्वारा समर्थित और 6 मंजिला इमारत का मुख्य मंदिर, जगत मंदिर या निज मंदिर के रूप में जाना जाता है । इस मंदिर का निर्माण कृष्ण के आवासीय महल के ऊपर, कृष्ण के महान पुत्र वज्रनाथ द्वारा किया गया था। चालुक्य शैली मे वर्तमान मंदिर का निर्माण 15-16वीं शताब्दी में किया गया । मंदिर के ऊपर का ध्वज सूर्य और चंद्रमा को दर्शाता है। माना जाता है कि कृष्ण तब तक रहेंगे जब तक सूर्य और चन्द्रमा पृथ्वी पर मौजूद रहेंगे। ध्वज को दिन मे 5 बार बदला जाता है।

3. तीसरा धाम : रामेश्वरम - यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर चार धामों मे एक धाम तो है ही साथ में यह भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक ज्योतिर्लिंग भी है। शिव पुराण के अनुसार इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना भगवान श्रीराम ने पूजन के लिए थी। जब रावण ने सीता जी का हरण किया था और उन्हे लंका ले गया था उस समय भगवान श्री राम बहुत व्याकुल होकर उनकी खोज मे दक्षिण की ओर निकले थे। रामेश्वरम मे समुद्र तट पर भगवान शिव की आराधना की और भगवान शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें ज्योति रूप में दर्शन दिए और ज्योतिर्लिंग के रूप में वहीं स्थापित हो गए । यह ज्योतिर्लिंग रामेश्वर तट पर स्थित था, इसलिए इसे रामेश्वरम ज्योर्तिलिंग या राम लिंगेश्वर ज्योतिर्लिंग कहा गया।

रामेश्वर मंदिर 1000 फुट लम्बा तथा चौड़ाई में 650 फुट चौड़ा है । इस मंदिर के निर्माण में लगे पत्थरों को नाव के जरिये श्रीलंका से लाया गया था। रामेश्वरम मंदिर में प्रवेश करने के लिए काफी लंबा चौड़ा गलियारा बनाया गया है। यह गलियारा विश्व के किसी मंदिर के गलियारों में से सबसे बड़ा है। यह गलियारा 1212 स्तंभों पर टिका हुआ है जिन पर बहुत सुन्दर कलाकृतियां बनी हुई है।

4. चौथा धाम : जगन्नाथ पुरी - यह मंदिर भगवान कृष्ण को समर्पित है। यह ओडिशा राज्य में स्थित है । इस मंदिर की स्थापना राजा इंद्रद्युम्न ने कराया था। भगवान की मूर्ति विश्वसु लकड़ी से बनायी गयी है।

मान्यता के अनुसार जगन्नाथ मंदिर के गर्भगृह मे भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां हैं, जो हर 12 वर्षो मे बदली जाती है। जब मंदिर की मूर्तियों को बदला जाता है। तब मूर्तियों में से ब्रह्म पदार्थ निकालकर नई मूर्तियो मे लगाया जाता है। ब्रह्म पदार्थ को श्री कृष्ण का हृदय माना जाता है। जगन्नाथ मंदिर के पुजारियो का कहना है कि जब वे भगवान का हृदय नई मूर्तियों में रखते है तब उन्हें अपने हाथो मे कुछ उछलता हुआ महसूस होता है। मंदिर के पुजारियो का मानना है कि यह ब्रह्म पदार्थ है जो अष्टधातु से बना है लेकिन यह ब्रह्म पदार्थ जीवित अवस्था में है। इस ब्रह्म पदार्थ को बदलते वक्त पुजारियो की आँखो पर रेशमी पट्टियां बांध दी जाती है। इसी तरह मंदिर की धूप मे कभी भी परछाई नही बनती है। प्रति वर्ष जून या जुलाई माह में भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र व बहन सुभद्रा के साथ रथ यात्रा पर निकलते हैं।

चार धाम यात्रा वास्तव मे एक पवित्र परिक्रमा हैं, जब कोई तीर्थ यात्री चार धाम यात्रा करता है तो वह वास्तव में पवित्र स्थलो की परिक्रमा कर रहा होता है। चार धाम यात्रा में व्यक्ति को अधिकांश समय पैदल चलना पड़ता है। जिससे शरीर में ऊर्जा बढ़ती है और ऐसा करने से आयु में वृद्धि होती है। इसलिए शास्त्रों में भी कहा गया है कि जो लोग चार धाम की यात्रा करते हैं, उन्हें आरोग्यता एवं आयु का आशीर्वाद प्राप्त होता है और वह आजीवन कई प्रकार की शारीरिक समस्याओं से दूर रहते हैं।

कविता संग्रह

श्रीमती प्रिया कुमारी,
पत्नी- श्री अखिलेश कुमार,
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय- महालेखाकार (ले.एवं ह.)-।। उ.प्र.,
प्रयागराज

देखो देखो बदली छायी

देखो देखो बदली छायी
उसके साथ बारिश आयी ।
लेकर छाता निकले हम
फिसला पैर गिर गए हम ।
बादल गरजे कुछ इस कदर
समाया दिल में अनचाहा डर ।
रिमझिम बारिश मन को भाती
देख किसानों की खुशियां जग जाती ।
जिधर देखो हरियाली दिख जाती
बारिश ऋतुओं की रानी कहलाती ।
ताल-तलैया लबालब भर जाती
मुरझाएं चेहरे पर खुशियां लहराती ।
गई गर्मी और बारिश आयी
कोयल ने मीठी कूक सुनायी ।
देखो देखो बदली छायी
उसके साथ बारिश आयी ।

अपनों के लिए वक्त नहीं

औरो की क्या बात करें हम
जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं ।
आँखों में नींद बहुत है पर
सोने का मिलता वक्त नहीं ।
दोस्तों की फेहरिस्त है लंबी
उनसे मिलने का भी वक्त नहीं ।
पैसे की होड़ में ऐसे दौड़ रहे,
पलभर ठहरने का भी वक्त नहीं ।
कभी सुना करते थे माँ से लोरी,
आज माँ के लिए ही वक्त नहीं ।
कट रही जिंदगी कुछ इस कदर
कि गुफ्तगू करने का भी वक्त नहीं।
संघर्षों से घिर गये है ऐसे
खुद के लिए भी वक्त नहीं ।
ऐसे फंसा हूँ भंवर जाल में
अपनों के लिए ही वक्त नहीं ।

मन की आवाज

श्री अरुण कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

बहुत परेशानी क्यों है ?
ये कैसी घबराहट है ।
है ये नया जगत पर,
कैसी ये हालत है ।
कहीं धमाके, कहीं पे धरना,
लगता ये समाज नया है ।
शांति से जीना नहीं है,
शांति के लिए जीना है ।
ये ईंट-पत्थरों के जंगल,
नित अगल-बगल बढ़ते जाते हैं ।
पेड़-पौधों से दूरी है,
हम इमारतों में ही खुशी मनाते हैं ।
मन को झकझोर देने वाली,
खबरें नित डराती हैं।
ये कैसा जीवन है,
यहाँ जिंदगी सिर्फ रुलाती है।

तन्हाई

श्री वकील सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज

रोने से किसी को कुछ हासिल नहीं होता,
जो बिछड़ जाए, वो सच्चा साथी नहीं होता ।
दूसरों की तो हम महफिल सजाते हैं,
पर हमारी तन्हाई में कोई शामिल नहीं होता।
छोटी सी है जिंदगी, हर बात में खुश रहो ।
जो चेहरा पास न हो, उसकी आवाज में खुश रहो ।
जो लौटकर नहीँ आने वाले, उनकी याद में खुश रहो,
कोई रूठा हो आपसे, उसके अंदाज में खुश रहो ।
कल किसने देखा है, अपने आज में खुश रहो ।
काश जिंदगी सचमुच किताब होती,
पढ़ सकता मैं कि आगे क्या होगा ।
वक्त से आँखें चुराकर पीछे चला जाता,
टूटे सपनों को फिर से अरमानों से सजाता ।
कुछ पल के लिए मै भी मुस्कुराता,
काश जिंदगी सचमुच किताब होती ।
टूट चुका हूँ, बिखरना बाकी है ।
कुछ एहसास बचे हैं, जिनका जाना बाकी है।
चंद सांसे है जिनका आना बाकी है,
मौत रोज मेरे सिरहाने खड़ी हो पूछती है,
भाई आ जा, अब क्या देखना बाकी है ।
तन्हाई में भी बहुत सी अच्छाई है,
बिना बात हंसाती है, रुलाती है।
बड़े-बड़े सपने दिखाती है,
तन्हाई में भी है बहुत सी अच्छाई
अपने आप से मिलवाती है ।
जिंदगी जीने का तरीका सिखाती है।
खुद पर भरोसा करना सिखलाती है ।
क्योंकि तन्हाई में भी बहुत सी अच्छाई है ।
ये मेरी तन्हाई है जो सच्ची साथी है ।
कभी किसी के आ जाने पर,
चंद लम्हों के लिए कही छुप जाती है ।
मेरे लिए क्या कुछ नहीं करती वो,
मेरे साथ नगमें गाती है,
मेरे साथ बातें करती है ।
ये मेरी तन्हाई है जो सच्ची साथी है ।

वर्ष 2022-23 के दौरान उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रमाण-पत्र वितरण

लेखापरीक्षा सप्ताह के दौरान आयोजित साइकिल रैली

क्षेत्रीय सलाहकार समिति की बैठक

हिंदी पखवाड़ा - 2022 के दौरान पुरस्कार वितरण के कुछ दृश्य

संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'ज्ञान गंगा' के प्रथम अंक का विमोचन

संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला की कुछ झलकियां

गणतंत्र दिवस आयोजन की कुछ झलकियां

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की झलकियां

संस्थान के सम्मेलन कक्ष में आयोजित रा.भा.का.स. की बैठक की कुछ झलकियां

महानिदेशक महोदय का विदाई समारोह

स्मार्ट क्लास का उद्घाटन

संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी अंगदान प्रतिज्ञा लेते हुए

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान

20, सरोजिनी नायडू मार्ग, प्रयागराज
दूरभाष : (0532) 2421364, 2421062, 262467
फैक्स : (0532) 2423485
ईमेल : rtiallahabad@cag.gov.in

अस्वीकरण

इस अंक में लेखकों / रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक मंडल का उनसे सहमत होना या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों एवं लेखन की मौलिकता संबंधी जिम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है। रचना/आलेखों के संपादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार संपादक मंडल में निहित होंगे।